संत श्री आसारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

हिन्दी

अंक : १३३
जनवरी २००४
पौष-माघ वि.सं. २०६०
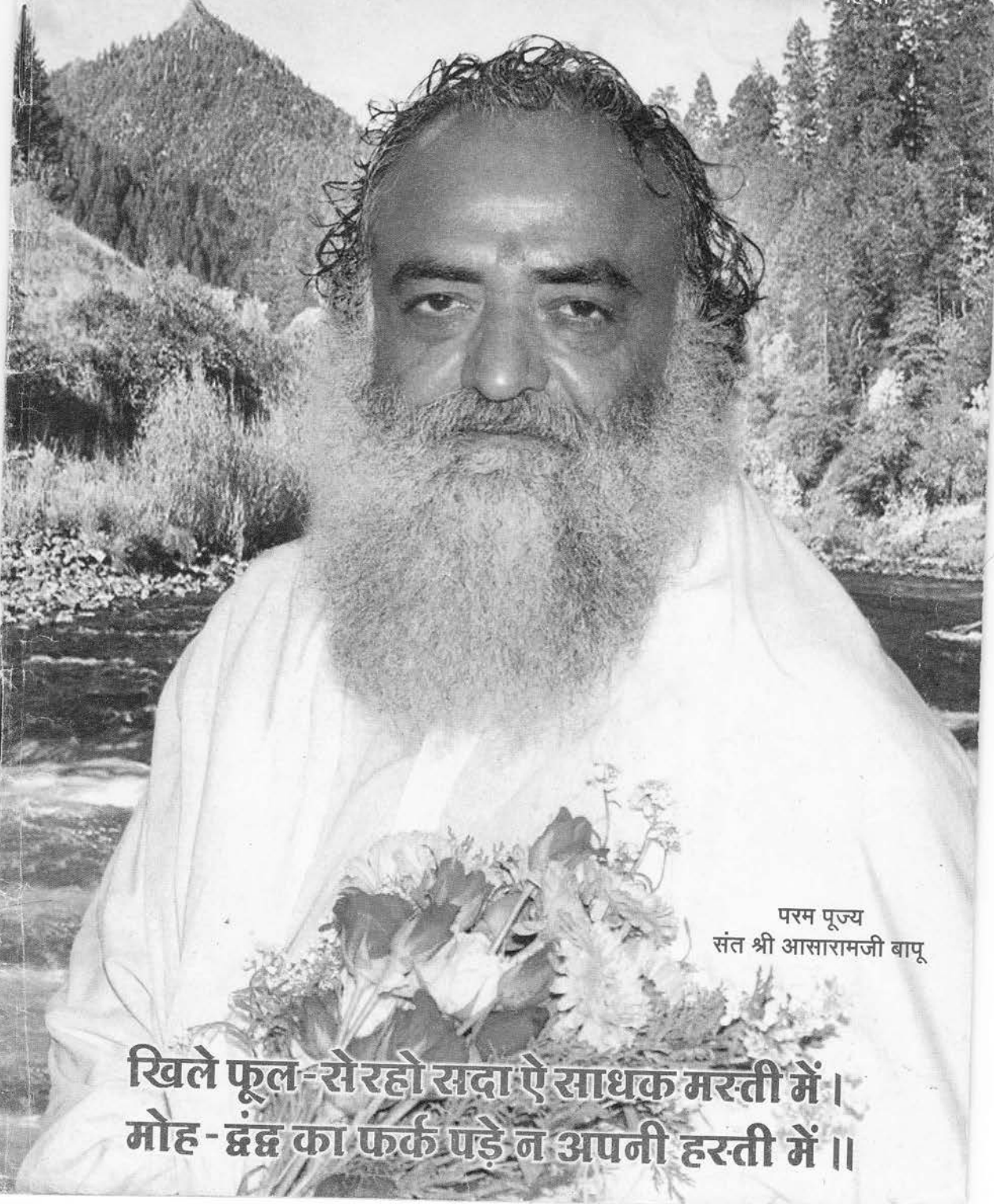
परम पूज्य
संत श्री आसारामजी बापू

खिले फूल-से रहो सदा ऐ साधक मस्ती में।
मोह-द्वंद्व का फर्क पड़े न अपनी हस्ती में ॥
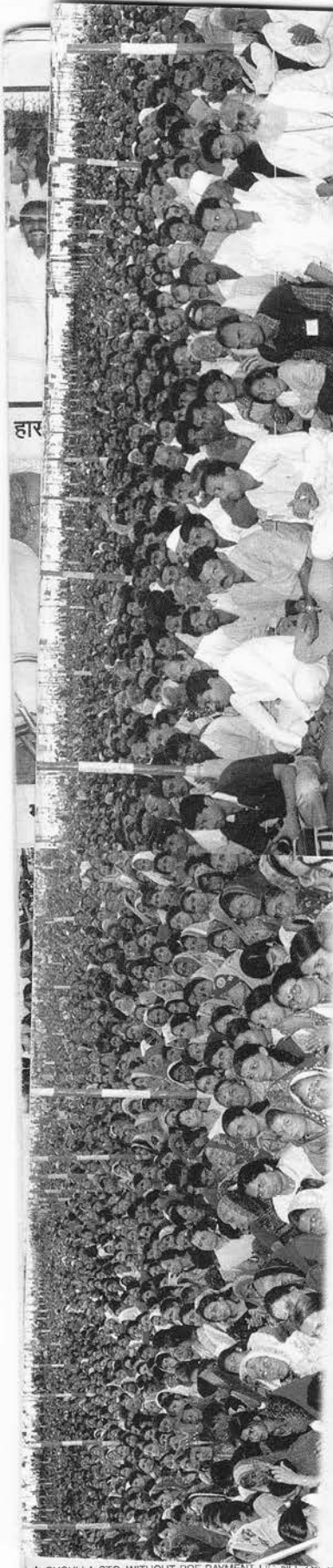
सागर भाँति यहाँ पर, उमड़ा जनसैलाब । बापूजी के सत्संग से, हुआ विलक्षण लाभ ॥ सागर (म.प्र.)

बड़भागी हैं हम यहाँ, बापूजी योग सिखायें । स्मृतिशक्ति बढ़ाने को, भ्रामरी प्राणायाम सिखायें ॥ वृंदावन (उ.प्र.)

आज दिवस के पुनीत नजारे

* BYCULLA STG. WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO.
AIRPORT PO. - 400099. * DELHI REGD. NO. DL-11513/2003 WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO.

ऋषि प्रसाद

वर्ष : १४ अंक : १३३
जनवरी २००४ मूल्य : रु. ६-००
पौष-माघ, वि.सं.२०६०

सदस्यता शुल्क

भारत में

(१) वार्षिक : रु. ५५/-
(२) द्विवार्षिक : रु. १००/-
(३) पंचवार्षिकः रु. २००/-
(४) आजीवन : रु. ५००/-

नेपाल, भूटान व पाकिस्तान में

(१) वार्षिक : रु. ८०/-
(२) द्विवार्षिक : रु. १५०/-
(३) पंचवार्षिकः रु. ३००/-
(४) आजीवन : रु. ७५०/-

विदेशों में

(१) वार्षिक : US $ 20
(२) द्विवार्षिक : US $ 40
(३) पंचवार्षिकः US $ 80
(४) आजीवन : US $ 200

कार्यालय '**ऋषि प्रसाद**' श्री योग वेदान्त सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, अमदावाद-३८०००५.
फोन : (०७९) ७५०५०१०-११.
e-mail : ashramindia@ashram.org
web-site: www.ashram.org

स्वामी : संत श्री आसारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : कौशिक वाणी
प्रकाशन स्थल : श्री योग वेदान्त सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, अमदावाद-३८०००५.
मुद्रण स्थल : हार्दिक वेबप्रिंट, राणीप और विनय प्रिंटिंग प्रेस, अमदावाद।
सम्पादक : कौशिक वाणी
सहसम्पादक : प्रे. खो. मकवाणा

'ऋषि प्रसाद' के सदस्यों से निवेदन है कि कार्यालय के साथ पत्र-व्यवहार करते समय अपना रसीद क्रमांक अथवा सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखें।

अनुक्रम

१. काव्य गुंजन २
* 'ऋषि प्रसाद' को मित्रो ! आदरसहित अपनाइये
* जागृति-प्रेरणा

२. विचार मंथन ३
* मनुष्य जीवन की सार्थकता : संयम में
* चारित्र्य-रक्षा

३. जीवन सौरभ ६
* देशभक्त सुभाषचंद्र

४. पर्व मांगल्य ८
* उत्तरायण : मकर संक्रांति

५. श्रीमद्भगवद्गीता ९
* ग्यारहवें अध्याय का माहात्म्य

६. साधना पाथेय १३
* परमात्म-प्राप्ति में सहायक १२ बातें

७. विवेक जागृति १५
* प्रमाद ही मृत्यु है

८. कथा अमृत १७
* बारहवीं पीढ़ी का क्या होगा ?

९. प्रेरक प्रसंग १९
* सत्य का बल
* गाँधीजी की सत्यनिष्ठा
* 'देवरहा बाबा से मिलना है'

१०. विद्यार्थियों के लिए २२
* विद्यार्थी-प्रश्नोत्तरी

११. नारी ! तू नारायणी २३
* अथाह शौर्य की धनी : किरण देवी

१२. सांस्कृतिक गौरव २५
* जहाँगीर ने शीश नवाया
* पादरियों द्वारा प्रताड़ित एक ईसाई

१३. प्रेरणादायी सूत्र २६

१४. सत्संग सुमन २७
* दान का अधिकारी कौन ?

१५. शरीर-स्वास्थ्य २८
* स्वास्थ्यप्रदायक प्रयोग
* स्वास्थ्य-कणिकाएँ

१६. भक्तों के अनुभव ३०
* ब्लड कैंसर से मुक्ति
* ...और मैं डी वाई.एस.पी.बन गयी

१७. संस्था समाचार ३१

पूज्यश्री के दर्शन-सत्संग

सोनी चैनल पर 'संत आसाराम वाणी' सोमवार से शुक्रवार सुबह ७-३० बजे व शनिवार और रविवार सुबह ७-०० बजे

संस्कार चैनल पर 'परम पूज्य लोकसंत श्री आसारामजी बापू की अमृतवर्षा' रोज दोप. २-०० बजे तथा रात्रि ९-४० बजे

साधना चैनल पर 'संत श्री आसारामजी बापू की सत्संग-सरिता' रोज रात्रि ९-०० बजे

आस्था चैनल पर 'संत श्री आसारामजी बापू की अमृतवाणी' सुबह ८-०० दोप. २-३० बजे

'ऋषि प्रसाद' को मित्रो ! आदरसहित अपनाइये

स्वास्थ्य चाहिए, सुख चाहिए, सम्मान चाहिए ?
'ऋषि प्रसाद' को मित्रो ! आदरसहित अपनाइये।
'ऋषि प्रसाद' है आपके करकमलों में सुशोभित,
अरे ! मिल गयी यह जानकर, अब मुस्कराइये ॥
यह दिव्य ज्ञान है, इसे पढ़िये-पढ़ाइये,
इसके सूत्र आजमाइये, परमानंद पाइये।
ले जाइये तोहफा मित्रो ! औरों तक पहुँचाइये,
सौगात है यह दिव्य, औरों को भिजवाइये ॥
है यह श्रेष्ठ, पवित्र, मधुर और अति सुंदर,
बगिया में मुस्करा रहे, मौलिक गुलाब की तरह।
नन्ही-सी दिख रही है, लगती है बड़ी प्यारी,
जब देखो इसे पलटकर, इसकी छटा है न्यारी ॥
दूध है यह दूध है, इसीमें नवनीत पाइये,
पाकर योग के खजाने, मंद-मंद मुस्कराइये।
शक्ति है इसमें, भक्ति और वेदान्त पाइये,
यह ज्ञान की घटा है, वर्षा में भीग जाइये ॥
भीतर सँजो रही है, संतत्व की महक को,
सत्य आपको सुखद है, इसे फिर लिये जाइये तो।
तन-धन-धर्म के खजाने, इसमें ही पाइये,
यदि है देश को बढ़ाना, इसे ही लिये जाइये ॥
सरोवर यह सदा है शीतल, डुबकी लगाइये,
श्रद्धासहित इसीमें, त्रय तापों को धोइये।
होकर गली-गली में, मुहल्लों में जाइये,
ले गुरुज्ञान का यह दीपक, ज्योति जगाइये ॥
खुद होकर प्रभु के प्यारे, प्यारे बनाइये,
डटकर सदा-सदा ही, धर्म देश जगमगाइये।
यह है गुरुज्ञान की मिठाई, जरूर खाइये,
सबको खिलाइये और आनंद पाइये ॥
होकर प्रभु के हर दिन, दिवाली मनाइये,
होकर सदा दीवाने, हर पल मुस्कराइये ॥

– मनोजभाई, सूरत (गुज.).

*

जाग्रति-प्रेरणा

उठो मानव ! आँख खोलो, सो चुके हो अब न सोना।
स्वर्ण घड़ियाँ कदाचित् तुम, खो चुके हो अब न खोना ॥
बहुत ही सुंदर समय है, जाग्रत जीवन बिताओ।
कहीं भी कर्तव्य-पालन में, न तुम आलस्य लाओ।
सबल होकर बहुत दुर्बल, हो चुके हो अब न होना ॥
उठो मानव !...

मोहनिद्रा में तुम्हें जो, दीखता यह मधुर सुख है।
अरे ! यह सब स्वप्न है बस, इसी सुख का अंत दुःख है।
तुम अनेकों बार अब तक, रो चुके हो अब न रोना ॥
उठो मानव !...

मिल रहा है वही तुमको, जो कि पहले से दिया है।
उसीका फल सामने है, शुभाशुभ जैसा किया है।
बीज अनुचित कर्म के यदि, बो चुके हो अब न बोना ॥
उठो मानव !...

एक होकर बन रहे हो, तुम अनेकों वेषधारी।
कभी स्वामी कभी सेवक, कभी राजा या भिखारी।
पथिक क्या-क्या अभी तक तुम, हो चुके हो अब न होना ॥
उठो मानव !...

– पथिकजी महाराज

*

सतत सुमिरन करो कि वह परमात्मा तुम्हारा है और तुम उसके हो। न खेत तुम्हारा है, न कपड़े तुम्हारे हैं, न मकान तुम्हारा है और न पुत्र-पत्नी तुम्हारे हैं। जिसका सब कुछ है वह यार तुम्हारा है और तुम उसके हो। ऐसा सतत सुमिरन रहे तो तुम नित्यमुक्त हो जाओगे।

* BYCULLA STG. WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO. ...
AIRPORT PO. - 400099. * DELHI REGD. NO. DL-11513/2003 WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO. ...

मनुष्य जीवन की सार्थकता : संयम में

✻ संत श्री आसारामजी बापू के सत्संग-प्रवचन से ✻

'दासबोध' में समर्थ रामदास ने कहा है :

सांडूनियां जगदीशा। मनुष्याचा मानी भर्वसा।
सार्थकेंविण वेंची वयसा। तो येक मूर्ख॥
अनीतीनें द्रव्य जोडी। धर्म नीती न्याय सोडी।
संगतीचें मनुष्य तोडी। तो येक मूर्ख॥

मूर्ख व्यक्ति के लक्षण बताते हुए समर्थ रामदास कहते हैं कि ईश्वर का आश्रय छोड़कर जो ईश्वर-विमुख मनुष्य पर विश्वास रखता है, जीवन व्यर्थ गँवाता है, गलत मार्ग से पैसे कमाकर धर्म, नीति और न्याय का त्याग करता है तथा श्रेष्ठजनों एवं संत की संगति से विमुख होता है वह मनुष्य मूर्ख है।

भगवान ने दया करके गीता में ऐसे मूर्खों को १०८ गालियाँ सुनायी हैं - **विमूढाः** (वी.आई.पी. कोटा के मूर्ख), **आसुरं भावमाश्रिताः** (दैत्यभाव का आश्रय लिये हुए), **नराधमाः** (मनुष्यों में अधम) आदि-आदि।

समर्थ कहते हैं :

नरदेहाचें उचित। कांहीं करावें आत्महित।
यथानुशक्त्या चित्तवित्त। सर्वोत्तमीं लावावें॥
हें कांहींच न धरी जो मनीं। तो मृतप्राय वर्ते जनीं।
जन्मा येऊन तेणें जननी। वायां च कष्टविली॥

मनुष्य-जन्म पाकर कुछ ऐसा कार्य करें, जिससे आत्मकल्याण हो। शरीर की सुविधा मिल गयी तो क्या बड़ी बात है ? वैसे तो सुअर को नाली में भी मजा आता है। सुअर को सुअरी के साथ नाली में जितना मजा आता है उतना ही कामी को कामिनी के साथ पलंग पर आता है, उससे ज्यादा नहीं। अपने-अपने शरीर के अनुकूल सबके मजे के साधन अलग-अलग हैं। सुअर-सुअरी को पलंग पर ले जाओ और कामी-कामिनी को उनकी जगह ले जाओ तो वे दुःखी होंगे।

शरीर को ऐश या सुविधा देना कोई बड़ी बात नहीं है। अपना चित्त और वित्त सबसे उत्तम कार्य में लगायें ताकि नरदेह सार्थक हो जाय। जो अपने आत्महित का विचार नहीं करता, वह अपने-आपका शत्रु ही है। वह व्यर्थ में आयुष्य खोता है, अंधकारमय नीच योनि में जाने की गलती करता है।

जो अपने-आपका भला नहीं करता उसने मनुष्य-जन्म पाकर व्यर्थ ही माता को गर्भवास की पीड़ा दी, माता का यौवन हरा।

जीवन में धर्म अनिवार्य है। धर्म किसे कहते हैं ?

धारयते इति धर्मः। या ध्रियते इति धर्मः।

जो धारण करने योग्य है वह धर्म है अथवा जो सबको धारण कर रहा है वह धर्म है। जिसने सारे ब्रह्माण्डों को और आपके तन, मन व जीवन को धारण कर रखा है, उस सत्ता को जानने तथा उससे लाभ उठाने की व्यवस्था को धर्म कहते हैं।

जिन कर्मों, विचारों या वृत्तियों से आपको दुःख होता है या होगा, उनसे अपने को बचाकर आत्मसुख की तरफ, सच्चे सुख की तरफ ले जाने में जो भी कर्म सहायक हैं वे सारे सत्कर्म हैं अर्थात् दुःखों से सदा के लिए छूटकर शाश्वत सुख की तरफ जाने में जो सहायक हैं वे सारे कर्म धर्म हैं। जैसे - माता-पिता को प्रणाम करना, गुरुजनों का सत्संग सुनना, जप, ध्यान, दान करना व स्त्रियों को मासिक धर्म का नियमतः पालन करना।

कुछ लोग कहते हैं कि 'हमारे धर्मग्रंथ में तो लिखा है मासिक धर्म के नियमों का पालन नहीं करना चाहिए।' सनातन धर्म सबका ख्याल रखता है और सबके उत्थान की बात करता है। सनातन

धर्म अमावस्या-पूनम को संभोग की मनाई करता है। कोई कहे कि 'हमारे पंथ में अमावस्या-पूनम को संभोग की मनाई नहीं है।' तो करो, अनुभव करके देखो। विकलांग बच्चों को लेकर भटकना पड़ेगा अथवा तो शरीर निस्तेज हो जायेगा। तुम्हारा ग्रंथ किसी व्यक्ति का बनाया हुआ है। किसी मुखिया या उपदेशक ने भाषण दिया और वे बातें ग्रंथ में आ गयीं, फिर वही धर्मग्रंथ बन गया! ऐसा धर्मग्रंथ सर्वमान्य नहीं होता।

सबका भला चाहकर सब दृष्टि से सार बात कहे, वह धर्मग्रंथ सर्वमान्य होता है। वेद सर्वमान्य हैं। उपनिषदें प्रमाण हैं क्योंकि वे वेदों से निकली हैं। पुराणों की जो बातें वेदों के अनुरूप हैं, वे स्वीकार्य हैं और जो वेदों के अनुकूल नहीं हैं, किसीने मिलावट कर दी है, वे स्वीकार्य नहीं हैं। उनसे आप बचें। सनातन सत्य, सनातन सुख तक पहुँचानेवाला वैदिक धर्म ही सनातन धर्म माना जाता है।

संत किन्हें कहते हैं ? जिनके अज्ञान का अंत हो गया हो, अपने परमेश्वर स्वभाव और अपने बीच जो नासमझी थी उसका जिन्होंने अंत कर दिया हो, उन्हें 'संत' कहते हैं।

शास्त्र किसे कहते हैं ? **शास्ति इति शास्त्रम्। या शासयति इति शास्त्रम्।** जो आपकी मनमुखता एवं उच्छृंखलता को रोककर ठीक रास्ते पर लगने की प्रेरणा दे, आपकी इन्द्रियों और मन को अनुशासित करके पतन से बचाकर उर्ध्वमुखी करे उस ज्ञान को शास्त्र कहते हैं।

व्यास किनको कहते हैं ? जो आपकी बिखरी हुई जीवनशक्ति, बिखरी हुई जीवन-शैली और बिखरी हुई मन की वृत्तियों को सुव्यवस्थित करने में सक्षम हों, उन्हें 'व्यास' कहते हैं। जिन्होंने वेदों के विभाग करके समाज को वैदिक ज्ञान दिया 'महाभारत' के द्वारा, पुराणों के द्वारा, 'ब्रह्मसूत्र' के द्वारा, 'गीता' के द्वारा...

स्त्री के मासिक धर्म के दौरान या अमावस्या, पूनम, अष्टमी, श्राद्धपक्ष, ४ महारात्रियों - शिवरात्रि, होली, जन्माष्टमी व दीपावली के दिन स्त्री के स्पर्श से हानि होती है, यह बात बिल्कुल शास्त्र-सम्मत है और आपके-हमारे अनुभव की है। यदि आप संयम की बात स्वीकारते हैं, सिखाते हैं और उसके अनुसार स्वयं चलते हैं तो आप तेजस्वी जीवन बितायेंगे, आपकी संतान भी तेजस्वी होगी।

रामकृष्ण परमहंस से किसीने पूछा : ''बाबा ! भजन तो बहुत लोग करते हैं। काली, श्रीकृष्ण, भगवान राम आदि को तो बहुत लोग मानते हैं लेकिन सभीको भगवान के दर्शन क्यों नहीं होते ? भगवान के सामर्थ्य का एहसास क्यों नहीं होता ?'' इस पर श्री रामकृष्ण ने जो उत्तर दिया है, उससे आपकी भी शंकाओं का समाधान हो जायेगा।

श्री रामकृष्ण ने कहा : ''लोग भजन तो करते हैं लेकिन उन्हें परमात्म-प्राप्ति नहीं होती। क्योंकि नींद में जब आपकी चित्तवृत्ति हिता नाम की नाड़ी में आती है तो आप सपने की दुनिया देखते हैं और जब गहरी नींद में चले जाते हैं तो आपकी वृत्ति हृदय में शांत होती है। लेकिन संयम करके भजन करते हैं तो आपकी ब्रह्मनाड़ी खुलती है। जो ब्रह्मचर्य आदि का पालन करते हैं, जिनकी ब्रह्मनाड़ी खुलती है उन्हींको ब्रह्म-परमात्मा का साक्षात्कार होता है।''

संयम होगा तभी ब्रह्मनाड़ी खुलेगी। भले फिर थोड़े दिन का ही संयम हो, शरीर में वीर्य संचित होता है तो आपके चहरे पर रौनक और मन में उत्साह होता है। गृहस्थी संभोगादि करते हैं, उसके दो मिनट के बाद ग्लानि और कमजोरी या खिन्नता आती है कि नहीं आती ? और दूसरे दिन सुबह कैसा लगता है - आपका अनुभव है।

बजाज कम्पनी के मालिक जमनादास बजाज के जमाई और गुजरात के भूतपूर्व राज्यपाल श्रीमन्नारायण ने आइन्स्टाईन से पूछा : ''आप पढ़ाई में तो एकदम साधारण विद्यार्थी थे, फिर भी अन्वेषण की दुनिया में इतने

BYCULLA STG. WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO. ...
AIRPORT PO. - 400099. DELHI REGD. NO. DL-11513/2003 WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO. ...

महान बने । इसका क्या कारण है ?''

आइन्स्टाईन उनको अपने ध्यान-कक्ष में ले गया और बोला : ''मैं रोज पातंजल योग के अनुसार ध्यान करता हूँ और पिछले चार साल से मैंने अपनी पत्नी के साथ सम्बन्ध नहीं जोड़ा है । इसी कारण मेरी बुद्धि में दिव्यता आयी है ।''

आइन्स्टाईन ने अपनी योग्यता माया को खोजने में लगायी, इसलिए वह विज्ञान के क्षेत्र में इतना उन्नत हो गया । अगर वह उसको भगवान को खोजने में लगाता तो महापुरुष हो जाता ।

कब ब्रेक पर पैर रखना, कब उठाना, कब स्टियरिंग घुमाना यह ड्राइवर के हाथ की बात है । ऐसे ही अपने मन की स्टियरिंग और ब्रेक अपने हाथ में रखनी चाहिए । आपको पता है जब नदी दो किनारों से बँधकर चलती है तो सागर तक पहुँचती है । नहर दो किनारों के बंधन में चलती है, तब खेतों को हरा-भरा करती है । अगर नदी और नहर किनारे तोड़ दें, संयम तोड़ दें तो खेतों को उजाड़ देंगी, तबाही कर देंगी और सागर तक नहीं पहुँच पायेंगी ।

वृक्ष अगर संयम से धरती से बँधा है तो हरा-भरा, फला-फूला है । वृक्ष कहे कि 'हमें तो कोई जरूरत नहीं कि धरती से बँधे रहें, नियम से बँधे रहें, यह क्या गुलामी ?' उसकी जड़ें नाचती रहें तो फिर वृक्ष सूख जायेगा और गिर जायेगा ।

वीणा के तार अगर खिंचे हुए हैं, बँधे हैं तो उनसे मधुर संगीत निकलता है । अगर वे कहें कि 'हम क्यों तने रहें ? क्यों बँधें, क्यों संयम में रहें ?' तो पड़े रहें फालतू, कोई संगीत नहीं गूँजेगा, कोई स्वर नहीं निकलेगा ।

रेलगाड़ी के इंजन में वाष्प जब संयत रहता है तो गाड़ी के चक्र घूमते हैं और वह हजारों टन का सामान एवं हजारों यात्रियों को ले भागती है । वही वाष्प अगर संयमरहित होता है तो उसकी शक्ति खो जाती है, तुच्छ हो जाती है । संयम के बिना मनुष्य न ऋद्धि-सिद्धि की ऊँची मंजिल, न अपने शुद्ध-बुद्ध-मुक्त स्वरूप अर्थात् अपनी आखिरी मंजिल की अनुभूति कर सकता है ।

नानकजी के लिए बोलते हैं कि वे गृहस्थी थे । नानकजी के परिवारवालों ने भले उनकी शादी करा दी लेकिन नानकजी तो वर्षों तक बाहर-ही-बाहर रहे । पत्नी के सम्पर्क में ज्यादा नहीं रहे । नानकजी को आप साधारण गृहस्थियों के साथ तौलोगे तो उस महापुरुष के बारे में गलत धारणा बनाने का पाप लगेगा । कबीरजी को साधारण गृहस्थियों के साथ तौलोगे, रामकृष्ण को, शिवाजी महाराज को दूसरे गृहस्थियों के साथ तौलोगे तो पाप लगेगा । शिवाजी राजवी पुरुष थे, फिर भी जीवन में ब्रह्मचर्य और संयम था इसीलिए ईश्वर-प्राप्ति की तड़प जगी तो गुरु के चरणों में लगे रहे, डटे रहे । उपदेश मिला, ब्रह्मनाड़ी जगी और अपने शाश्वत आत्मा-परमात्मा का, पूर्ण जीवन का, प्राप्त-प्राप्तव्य का, ज्ञात-ज्ञातव्य की ऊँची यात्रा का राजा जनक की नाईं अनुभव किया । संयमी, तत्पर व संतसेवी के लिए यह कठिन थोड़े ही है ।

संयम से ही मनुष्य ब्रह्म-परमात्मा का साक्षात्कार करने में सफल हो सकता है ।

*

संयम से, शक्ति से, समझाने-बुझाने से भी अपनी रक्षा आप कर सकोगे तो ही होगी अन्यथा तैंतीस करोड़ देवता भी आ जायें परंतु जब तक आप स्वयं विकारों से बचकर ऊँचे उठना नहीं चाहोगे, उसके लिए पुरुषार्थ नहीं करोगे तो आपका कल्याण हो, यह संभव नहीं है ।

गुरु सदा तत्पर हैं तुम्हें आत्मस्वरूप की ओर ले जाने को । वे प्रतिपल यह देखने को आतुर हैं कि यह जीव कब माया के आवरणों को दूर करके अपने असली स्वरूप को जान लेगा ।

चारित्र्य-रक्षा

जयप्रकाश नारायण अमेरिका पढ़ने गये थे उस समय की बात है। उनके पास फीस के पैसे नहीं थे, इसलिए उन्होंने कुछ व्यापार करके पैसे कमाने का सोचा। विचार करके उन्होंने एक व्यापार ढूँढ निकाला और शिकागो शहर की गलियों में घूमकर हिमालय की जड़ी-बूटियाँ एवं सौंदर्य-प्रसाधन जैसे - क्रीम, पाउडर आदि बेचना शुरू किया।

एक बार वे हब्शियों (अमेरिका के निवासी) के इलाके में जा पहुँचे। वहाँ एक हब्शी युवती ने उनसे क्रीम आदि की खरीदी की। जयप्रकाशजी ने उससे पैसे माँगे तो उसने दूसरे दिन पैसे लेने के लिए आने को कहा। दूसरे दिन वे पैसे लेने गये तो युवती ने उनके आगे चाय-नाश्ता रख दिया और अगले दिन पैसे लेने के लिए आने को कहा।

जयप्रकाशजी को कुछ समझ में नहीं आया कि यह युवती पैसे नहीं दे रही है और रोज दूसरे दिन आने के वायदे-पर-वायदे क्यों कर रही है? आखिर एक दिन उनको इस बात का रहस्य समझ में आ गया जब वह युवती जयप्रकाशजी को अपने कमरे में ले गयी और उनके समक्ष अश्लील एवं अभद्र हरकतें करने लगी। अब जयप्रकाशजी को असली बात समझ में आयी कि 'यह युवती मेरी देह का उपभोग करने के लिए मुझे इस तरह अपने घर बुला रही थी।' यह समझ में आते ही जयप्रकाशजी के मन में विचार आया कि 'भारत से लम्बा रास्ता तय करके मैं इतनी दूर अमेरिका पढ़ने आया हूँ, मौज मनाने या भोग-विलास के लिए नहीं आया और यह सब मेरे भारतीय संस्कारों को शोभा भी नहीं देता। ऐसे विषय-विकारों में पड़ जाऊँगा तो मेरी पढ़ाई दुर्लक्षित हो जायेगी। मेरा लक्ष्य तो पढ़ाई करने का है, विषय-विलास और मौज-मजे करना मेरा लक्ष्य नहीं।'

इस विचार के बाद तुरंत ही वे कमरे से बाहर निकल गये और दुबारा उस युवती के घर पर तो क्या उस विस्तार में भी कदम नहीं रखा। पैसे पैसे के ठिकाने पर ही रह गये।

देशभक्त सुभाषचंद्र

[सुभाषचंद्र बोस जयंती : २३ जनवरी]

सुभाषचंद्र बोस का नाम स्वतंत्रता संग्राम के महारथियों की अग्रिम पंक्ति में आता है।

कर्तव्यनिष्ठा व वचनबद्धता आदि सद्गुणों के साथ-साथ मानव-जाति के प्रति उदारता व सहिष्णुता की भावना से उनका जीवन ओतप्रोत रहा।

"ईश्वर को साक्षी करके मैं यह पुनीत शपथ लेता हूँ कि मैं सुभाषचंद्र बोस भारत और उन करोड़ों देशवासियों को स्वतंत्र कराने के लिए स्वतंत्रता के इस पुनीत युद्ध को अपने जीवन के अंतिम क्षण तक जारी रखूँगा।" अपने इस वचन पर वे जीवन के आखिरी पल तक अटल रहे। अपने जीवन के समस्त सुख-वैभवों को स्वतंत्रता की वेदी पर अर्पित कर उन्होंने स्वयं को अमर कर लिया।

उनका जन्म २३ जनवरी, १८९७ को उड़ीसा के कटक प्रांत में हुआ था। उनके पिता का नाम रायबहादुर जानकीनाथ बोस था। माता प्रभावती बड़ी ही धार्मिक प्रकृति की महिला थीं। जिनके संस्कारों का सुभाषचंद्र पर गहरा असर पड़ा। अपने बाल्यकाल से ही सुभाषचंद्र बड़े ही निर्भीक, साहसी और उदार प्रकृति के थे। सत्संग व संत-समागम का एक भी अवसर वे अपने हाथ से छूटने नहीं देते थे। स्वामी विवेकानंदजी के कटक आगमन पर इन्होंने स्वामीजी का सत्संग बड़े ध्यान से सुना तथा एक-एक वचन को

BYCULLA STG. WITHOUT PRE-PAYMENT ...
AIRPORT PO. - 400099. DELHI REGD. NO. DL-11513/2003 WITHOUT PRE-PAYMENT ...

हृदयंगम कर लिया।

सुभाषचंद्र की किशोरावस्था की एक घटना मातृभूमि के प्रति उनके प्रगाढ़ प्रेम तथा अप्रतिम शौर्य को प्रदर्शित करती है। सन् १९१५ में सुभाष ने कलकत्ता के प्रेसीडेन्सी कॉलेज में बी.ए. की शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रवेश लिया। उस समय उनकी उम्र १८ वर्ष थी। वहाँ भारतीय विद्यार्थियों के प्रति अंग्रेज प्राध्यापकों का व्यवहार अच्छा न था। किसी भी छोटे-से कारण पर वे छात्रों को बड़ी भद्दी-भद्दी गालियाँ सुना दिया करते थे।

एक बार सुभाष की कक्षा के कुछ छात्र अध्ययन कक्ष के बाहर बरामदे में खड़े थे। प्रोफेसर ई. एफ. ओटेन उधर से गुजरे और बरामदे में खड़े छात्रों पर बरस पड़े :

''जंगली, काले, बदतमीज इंडियन... !''

अपनी मातृभूमि का घोर अपमान होता देखकर सुभाष का खून खौल उठा। वे अपने साथियों के साथ ओटेन की शिकायत लेकर प्रधानाचार्य के पास गये। प्रधानाचार्य भी अंग्रेज ही था, अतः उसने भी ओटेन का ही पक्ष लिया। दूसरा रास्ता न पाकर सुभाष अपनी कक्षा के विद्यार्थियोंसहित हड़ताल पर उतर आये, जिसका बहुत ही सकारात्मक प्रभाव पड़ा। अंततः प्रधानाचार्य और ओटेन, दोनों ने मजबूर होकर छात्रों से समझौता किया। कुछ दिनों तक तो ओटेन शांत रहा परंतु एक दिन वह अपनी सीमा पार कर गया। ओटेन ने एक छात्र से प्रश्न पूछा पर छात्र उत्तर नहीं दे सका। इस साधारण-सी बात पर ओटेन ने उसे गालियाँ देना आरम्भ कर दिया : ''यू ब्लैक मंकी... इडियट... !''

यह सुनकर सुभाष को मर्मान्तक पीड़ा हुई। एक भारतवासी की तुलना काले बंदर से ! इतना तिरस्कार !

सुभाष उठ खड़े हुए और बोले : ''प्रोफेसर साहब ! आपको ऐसे असभ्य शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।''

ओटेन और अधिक भड़क उठा और चिल्लाकर बोला : ''यू ब्लडी ! तुम बैठता है कि नहीं।''

सुभाष सीधे ओटेन के पास आये और उसके गाल पर एक जोरदार झापड़ देकर बोले : ''तुम अपने-आपको क्या समझते हो, प्रोफेसर ? तुम किस मुँह से गाली बकते हो, जबान खींच लूँगा।''

घटना की खबर शीघ्र ही चारों तरफ फैल गयी। पर यह एक अंग्रेज अध्यापक को ही नहीं, बल्कि ब्रिटिश सरकार को भी दिया गया एक करारा तमाचा था कि भारतीयों के स्वाभिमान के साथ खेलने का क्या परिणाम होता है।

अंग्रेज भारत छोड़कर चले गये और भारत स्वतंत्र हो गया परंतु भारतीय संस्कृति को तिरस्कृत व अपमानित करने के ऐसे घृणित कार्य अभी भी बंद नहीं हुए हैं। **आज भी कॉन्वेंट स्कूलों में भारतीय संस्कृति को निम्न कोटि का दर्शाया जाता है। तिलक लगाना, राखी बाँधना तथा पायल पहनना आदि परम्परागत रीति-रिवाज, जो शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद हैं,** उन्हें अशिष्ट व अनावश्यक बताकर विद्यार्थियों को उन्हें जबरन छोड़ने के लिए कहा जाता है और न मानने पर तरह-तरह के दंड दिये जाते हैं। पैरों में पायल पहनना महिलाओं के गुप्त रोगों को दूर रखने हेतु ऋषि-परंपरा की देन है।

हमें भी अपने अंदर सुभाषचंद्र जैसा आत्मबल, देशभक्ति व निर्भयता लानी चाहिए, जिससे हम इन सांस्कृतिक आक्रमणों से अपनी भारतीय संस्कृति को बचा सकें।

*

अगर तुम ठान लो, तारे गगन के तोड़ सकते हो।
अगर तुम ठान लो, तूफान का मुख मोड़ सकते हो॥

ऐसी कोई समस्या नहीं जिसका समाधान न हो। जीवन में यदि संयम, सदाचार, प्रेम, सहिष्णुता, निर्भयता, पवित्रता, दृढ़ आत्मविश्वास और उत्तम संग हो तो आपके लिए अपना लक्ष्य प्राप्त करना आसान हो जाता है।

उत्तरायण : मकर संक्रांति

[मकर संक्रांति : १५ जनवरी]

✲ संत श्री आसारामजी बापू के सत्संग-प्रवचन से ✲

सूर्य की गति छः महीने उत्तरायण की ओर होती है और छः महीने दक्षिणायन की ओर। जो योगीजन उत्तरायण के दिनों में शरीर त्यागते हैं, वे ब्रह्मलोक की यात्रा करते हैं और जो दक्षिणायन में शरीर त्यागते हैं, वे चंद्रलोक तक की ही यात्रा कर पाते हैं।

ब्रह्मलोक में निवास करनेवाले योगीजन, जब तक ब्रह्माजी रहेंगे तब तक ब्रह्मलोक में रहेंगे। जब ब्रह्माजी के १०० वर्ष पूरे हो जायेंगे, तब ब्रह्माजी आखिरी सार तत्त्व का उपदेश देंगे और वे योगीजन व्यापक ब्रह्म में विलीन हो जायेंगे। जिनको करोड़ों वर्ष ब्रह्मलोक का सुख भोगना है वे योगी उत्तरायण में देह छोड़ते हैं। यह उपासक योगियों का मार्ग है।

दूसरे होते हैं अनुभूत योगी। जिन्होंने ब्रह्म-परमात्मा को यहीं पा लिया है। उनको न किसी ब्रह्मलोक में जाना है, न ही ब्रह्माजी के लोक में संकल्पशक्ति से भोग भोगने हैं और न ब्रह्मसुख पाना है वरन् वे तो यहीं परमात्म-सुख से तृप्त रहते हैं। ऐसे जीवन्मुक्त महापुरुष शरीर छूटने पर ब्रह्म-परमात्मा में विलीन हो जाते हैं। उनको शरीर छोड़ने के लिए कोई राह देखने की जरूरत नहीं पड़ती।

जो योगीजन दक्षिणायन में शरीर छोड़ते हैं, वे चंद्रमा की ज्योति को प्राप्त होकर फिर समय पाकर मृत्युलोक में लौट आते हैं, किसी अच्छे कुल में जन्म लेते हैं और फिर उनकी आगे की योगमार्ग की यात्रा शुरू हो जाती है।

एक बात ध्यान देने योग्य है कि जीव-जंतुओं के लिए ऐसा कोई नियम नहीं है कि अच्छी तिथि को मरे तो अच्छी गति हो और आम आदमियों के लिए भी ऐसी कोई विशेष व्यवस्था नहीं है। किंतु जो भगवान का भजन करते हैं, ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग, हठयोग, ध्यानयोग, लययोग आदि करते हैं, जो ईश्वर की प्रीति के निमित्त, ईश्वर को पाने के निमित्त यत्न करते हैं उनके लिए उत्तरायण का अवसर विशेष महत्त्ववाला होता है। इच्छामृत्यु के सामर्थ्यवान भीष्म पितामह ने ५२ दिन शरशैया पर रहकर दक्षिणायन में देहत्याग न करके उत्तरायण का इंतजार किया था।

तुलसी पूर्व के पाप से हरिचर्चा न सुहाय।

कोई पुण्यात्मा है कि दुरात्मा, इसकी कसौटी करनी हो तो उसे ले जाओ किसी सच्चे संतपुरुष के पास। अगर वह आता है तो तुम उसे जितना पापी समझते हो उतना वह पापी नहीं है। अगर नहीं आता तो तुम उसे जितना धर्मात्मा मानते हो उतना वह धर्मात्मा नहीं है। शास्त्रवेत्ता कहते हैं कि सात जन्मों के पुण्य जब जोर मारते हैं तब मनुष्य को संत-दर्शन की इच्छा होती है।

एक घड़ी आधी घड़ी, आधी में पुनि आध।
तुलसी संगत साध की, हरे कोटि अपराध॥

कोई चार कदम चलकर ब्रह्मज्ञान के सत्संग में जाता है तो यमराज की भी ताकत नहीं कि उसे हाथ लगाये। ब्रह्मज्ञान के सत्संग-श्रवण की कितनी महत्ता है!

ऐसा सत्संग सुनने से पाप-ताप कम हो जाते हैं। पाप करने की रुचि भी कम हो जाती है। सत्संग से बल बढ़ता है, सारी दुर्बलताएँ दूर होने लगती हैं। परमात्मा सर्वत्र हैं, सुलभ हैं लेकिन उनका अनुभव करानेवाले महात्मा दुर्लभ हैं। ऐसे महात्माओं का संग मिल जाय, सत्संग मिल जाय तो जीवन में रंग आ जाय...

- आश्रम से प्रकाशित पुस्तक 'सामर्थ्य स्रोत' से

✲ BYCULLA STG. WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO. ...
AIRPORT P.O. - 400099. ✲ DELHI REGD. NO. DL-11513/2003 WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO. ...

ग्यारहवें अध्याय का माहात्म्य

श्रीमहादेवजी पार्वतीजी से कहते हैं : प्रिये ! गीता के वर्णन से सम्बन्ध रखनेवाली कथा और विश्वरूप अध्याय के पावन माहात्म्य को श्रवण करो । विशाल नेत्रोंवाली पार्वती ! इस अध्याय के माहात्म्य का पूरा-पूरा वर्णन नहीं किया जा सकता । इसके सम्बन्ध में सहस्रों कथाएँ हैं । उनमें से एक यहाँ कह रहा हूँ । प्रणीता नदी के तट पर मेघंकर नाम से विख्यात एक बहुत बड़ा नगर है । उसके प्राकार (चारदीवारी) और गोपुर (द्वार) बहुत ऊँचे हैं । वहाँ बड़ी-बड़ी विश्रामशालाएँ हैं, जिनमें सोने के खंभे शोभा दे रहे हैं । उस नगर में श्रीमान, सुखी, शांत, सदाचारी तथा जितेन्द्रिय मनुष्यों का निवास है । वहाँ हाथ में शारंग नामक धनुष धारण करनेवाले जगदीश्वर भगवान विष्णु विराजमान हैं । वे परब्रह्म के साकार स्वरूप हैं, संसार को जीवन प्रदान करनेवाले हैं । उनका गौरवपूर्ण श्रीविग्रह भगवती लक्ष्मी के नेत्र-कमलों द्वारा पूजित होता है । भगवान की वह झाँकी वामन-अवतार की है । मेघ के समान उनका श्याम वर्ण तथा कोमल आकृति है । वक्षःस्थल पर श्रीवत्स का चिह्न शोभा पाता है । वे कमल और वनमाला से विभूषित हैं । अनेक प्रकार के आभूषणों से सुशोभित हो भगवान वामन रत्नयुक्त समुद्र के सदृश जान पड़ते हैं । पीताम्बर से उनके श्याम विग्रह की कान्ति ऐसी प्रतीत होती है मानों, चमकती हुई बिजली से घिरा हुआ स्निग्ध मेघ शोभा पा रहा हो । उन भगवान वामन का दर्शन करके जीव जन्म और संसार के बन्धन से मुक्त हो जाता है । उस नगर में मेखला नामक महान तीर्थ है, जिसमें स्नान करके मनुष्य शाश्वत वैकुण्ठ धाम को प्राप्त होता है । वहाँ जगत के स्वामी करुणासागर भगवान नृसिंह का दर्शन करने से मनुष्य सात जन्मों के किये हुए घोर पाप से छुटकारा पा जाता है । जो मनुष्य मेखला में गणेशजी के दर्शन करता है, वह सदा दुस्तर विघ्नों से भी पार हो जाता है ।

उसी मेघंकर नगर में कोई श्रेष्ठ ब्राह्मण थे, जो ब्रह्मचर्यपरायण, ममता और अहंकार से रहित, वेद-शास्त्रों में प्रवीण, जितेन्द्रिय तथा भगवान वासुदेव के शरणागत थे । उनका नाम सुनन्द था । प्रिये ! वे शारंग धनुष धारण करनेवाले भगवान के पास गीता के ग्यारहवें अध्याय - विश्वरूपदर्शनयोग का पाठ किया करते थे । उस अध्याय के प्रभाव से उन्हें ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति हो गयी थी । परमानंद-संदोह से पूर्ण उत्तम ज्ञानमयी समाधि के द्वारा इन्द्रियों के अंतर्मुख हो जाने के कारण वे निश्चल स्थिति को प्राप्त हो गये थे और सदा जीवन्मुक्त योगी की स्थिति में रहते थे । एक समय जब बृहस्पति सिंह राशि पर स्थित थे, महायोगी सुनन्द ने गोदावरीतीर्थ की यात्रा आरम्भ की । वे क्रमशः विरजतीर्थ, तारातीर्थ, कपिलासंगम, अष्टतीर्थ, कपिलाद्वार, नृसिंहवन, अम्बिकापुरी तथा करस्थानपुर आदि क्षेत्रों में स्नान और दर्शन करते हुए विवादमण्डप नामक नगर में आये । वहाँ उन्होंने प्रत्येक घर में जाकर अपने ठहरने के लिए स्थान माँगा, परंतु कहीं भी उन्हें स्थान नहीं मिला । अंत में गाँव के मुखिया ने उन्हें एक बहुत बड़ी धर्मशाला दिखा दी । ब्राह्मण ने साथियोंसहित उसके भीतर जाकर रात में निवास किया । सवेरा होने पर उन्होंने अपने को तो धर्मशाला के बाहर पाया, किंतु उनके और साथी नहीं दिखाई दिये । वे उन्हें खोजने के लिए चले, इतने में ही ग्रामपाल (मुखिये) से उनकी भेंट हो गयी । ग्रामपाल ने कहा : 'मुनिश्रेष्ठ ! तुम सब प्रकार से दीर्घायु जान पड़ते

हो। सौभाग्यशाली तथा पुण्यवान पुरुषों में तुम सबसे पवित्र हो। तुम्हारे भीतर कोई लोकोत्तर प्रभाव विद्यमान है। तुम्हारे साथी कहाँ गये ? कैसे इस भवन से बाहर हुए ? इसका पता लगाओ। मैं तुम्हारे सामने इतना ही कहता हूँ कि तुम्हारे जैसा तपस्वी मुझे दूसरा कोई नहीं दिखाई देता। विप्रवर ! तुम्हें किस महामंत्र का ज्ञान है ? किस विद्या का आश्रय लेते हो तथा किस देवता की दया से तुम्हें अलौकिक शक्ति प्राप्त हो गयी है ? भगवन् ! कृपा करके इस गाँव में रहो। मैं तुम्हारी सब प्रकार से सेवा-सुश्रूषा करूँगा।'

यह कहकर ग्रामपाल ने मुनीश्वर सुनन्द को अपने गाँव में ठहरा लिया। वह दिन-रात बड़ी भक्ति से उनकी सेवा-टहल करने लगा। जब सात-आठ दिन बीत गये, तब एक दिन प्रातःकाल आकर वह बहुत दुःखी हो महात्मा के सामने रोने लगा और बोला : 'हाय ! आज रात में राक्षस ने मुझ भाग्यहीन के बेटे को चबा लिया है। मेरा पुत्र बड़ा ही गुणवान और भक्तिमान था।' ग्रामपाल के इस प्रकार कहने पर योगी सुनन्द ने पूछा : 'कहाँ है वह राक्षस ? और किस प्रकार उसने तुम्हारे पुत्र का भक्षण किया है ?'

ग्रामपाल बोला : ब्रह्मन् ! इस नगर में एक बड़ा भयंकर नरभक्षी राक्षस रहता है। वह प्रतिदिन आकर इस नगर के मनुष्यों को खा लिया करता था। तब एक दिन समस्त नगरवासियों ने मिलकर उससे प्रार्थना की : 'राक्षस ! तुम हम सब लोगों की रक्षा करो। हम तुम्हारे लिए भोजन की व्यवस्था किये देते हैं। यहाँ बाहर के जो पथिक रात में आकर नींद लेने लगें, उनको खा जाना।' इस प्रकार नागरिक मनुष्यों ने गाँव के (मुझ) मुखिया द्वारा इस धर्मशाला में भेजे हुए पथिकों को ही राक्षस का आहार निश्चित किया। अपने प्राणों की रक्षा के लिए ही उन्हें ऐसा करना पड़ा। आप भी अन्य राहगीरों के साथ इस धर्मशाला में आकर सोये थे, किंतु राक्षस ने उन सबको तो खा लिया, केवल आपको छोड़ दिया है। द्विजोत्तम ! आपमें ऐसा क्या प्रभाव है, इस बात को आप ही जानते हैं। कल मेरे पुत्र का एक मित्र आया था, किंतु मैं उसे पहचान न सका। वह मेरे पुत्र को बहुत ही प्रिय था, किंतु अन्य राहगीरों के साथ उसे भी मैंने उसी धर्मशाला में भेज दिया। मेरे पुत्र ने जब सुना कि मेरा मित्र भी उसमें प्रवेश कर गया है, तब वह उसे वहाँ से ले आने के लिए गया, परंतु राक्षस ने उसे भी खा लिया। आज सवेरे मैंने बहुत दुःखी होकर उस पिशाच से पूछा : 'ओ दुष्टात्मन् ! तूने रात में मेरे पुत्र को भी खा लिया। तेरे पेट में पड़ा हुआ मेरा पुत्र जिससे जीवित हो सके, ऐसा कोई उपाय यदि हो तो बता।'

राक्षस ने कहा : ग्रामपाल ! धर्मशाला के भीतर घुसे हुए तुम्हारे पुत्र को न जानने के कारण मैंने उसका भक्षण किया है। अन्य पथिकों के साथ तुम्हारा पुत्र भी अनजाने में ही मेरा ग्रास बन गया है। वह मेरे उदर में जिस प्रकार जीवित और रक्षित रह सकता है, वह उपाय स्वयं विधाता ने ही कर दिया है। जो ब्राह्मण सदा गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करता हो, उसके प्रभाव से मेरी मुक्ति होगी और मरे हुओं को पुनः जीवन प्राप्त होगा। यहाँ कोई ब्राह्मण रहते हैं, जिनको मैंने एक दिन धर्मशाला से बाहर कर दिया था। वे निरन्तर गीता के ग्यारहवें अध्याय का जप किया करते हैं। इस अध्याय के मंत्र से जल को सात बार अभिमंत्रित करके यदि वे मेरे ऊपर उसका छींटा दें तो निस्संदेह मेरा शाप से उद्धार हो जायेगा। इस प्रकार उस राक्षस का संदेश पाकर मैं तुम्हारे निकट आया हूँ।

ब्राह्मण ने पूछा : ग्रामपाल ! जो रात में सोये हुए मनुष्यों को खाता है, वह प्राणी किस पाप से राक्षस हुआ है ?

ग्रामपाल बोला : ब्रह्मन् ! पहले इस गाँव में कोई ब्राह्मण किसान रहता था। एक दिन वह अगहनी के खेत की क्यारियों की रक्षा करने में लगा था। वहाँ से थोड़ी ही दूर पर एक बहुत बड़ा गिद्ध किसी राही को मारकर खा रहा था। उसी समय एक तपस्वी कहीं से आ निकले, जो उस राही को बचाने के लिए दूर से ही दया दिखाते आ

* BYCULLA STG. WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO. ...
AIRPORT P.O. - 400099. * DELHI REGD. NO. DL-11513/2003 WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO. ...

रहे थे। गिद्ध उस राही को खाकर आकाश में उड़ गया। तब तपस्वी ने कुपित होकर उस किसान से कहा : 'ओ दुष्ट हलवाहे ! तुझे धिक्कार है ! तू बड़ा ही कठोर और निर्दयी है। दूसरे की रक्षा से मुँह मोड़कर केवल पेट पालने के धंधे में लगा है। तेरा जीवन नष्टप्राय है। अरे ! शक्ति होते हुए भी जो चोर, दाढ़वाले जीव, सर्प, शत्रु, अग्नि, विष, जल, गीध, राक्षस, भूत तथा बेताल आदि के द्वारा घायल हुए मनुष्यों की उपेक्षा करता है, वह उनके वध का फल पाता है। जो शक्तिशाली होकर भी चोर आदि के चंगुल में फँसे हुए ब्राह्मण को छुड़ाने की चेष्टा नहीं करता, वह घोर नरक में पड़ता है और फिर भेड़िये की योनि में जन्म लेता है। जो वन में मारे जाते हुए तथा गिद्ध और व्याघ्र की दृष्टि में पड़े हुए जीव की रक्षा के लिए 'छोड़ो... छोड़ो...' की पुकार करता है, वह परम गति को प्राप्त होता है। जो मनुष्य गौओं की रक्षा के लिए व्याघ्र, भील तथा दुष्ट राजाओं के हाथ से मारे जाते हैं, वे भगवान विष्णु के उस परम पद को पाते हैं जो योगियों के लिए भी दुर्लभ है। सहस्र अश्वमेध और सौ वाजपेय यज्ञ मिलकर शरणागत-रक्षा की सोलहवीं कला के बराबर भी नहीं हो सकते। दीन तथा भयभीत जीव की उपेक्षा करने से पुण्यवान पुरुष भी समय आने पर कुम्भीपाक नामक नरक में पकाया जाता है। तूने दुष्ट गिद्ध के द्वारा खाये जाते हुए राही को देखकर उसे बचाने में समर्थ होते हुए भी जो उसकी रक्षा नहीं की, इससे तू निर्दयी जान पड़ता है, अतः तू राक्षस हो जा।

हलवाहा बोला : महात्मन् ! मैं यहाँ उपस्थित अवश्य था, किंतु मेरे नेत्र बहुत देर से खेत की रक्षा में लगे थे, अतः पास होने पर भी गिद्ध के द्वारा मारे जाते हुए इस मनुष्य को मैं नहीं जान सका। अतः मुझ दीन पर आपको अनुग्रह करना चाहिए।

तपस्वी ब्राह्मण ने कहा : जो प्रतिदिन गीता के ग्यारहवें अध्याय का जप करता है, उस मनुष्य के द्वारा अभिमंत्रित जल जब तुम्हारे मस्तक पर पड़ेगा, उस समय तुम्हें शाप से छुटकारा मिल जायेगा।'

यह कहकर तपस्वी ब्राह्मण चले गये और वह हलवाहा राक्षस हो गया। अतः द्विजश्रेष्ठ ! तुम चलो और ग्यारहवें अध्याय से तीर्थ के जल को अभिमंत्रित करो, फिर अपने ही हाथ से उस राक्षस के मस्तक पर उसे छिड़क दो।

ग्रामपाल की यह सारी प्रार्थना सुनकर ब्राह्मण का हृदय करुणा से भर आया। वे 'बहुत अच्छा' कहकर उसके साथ राक्षस के निकट गये। वे ब्राह्मण योगी थे। उन्होंने विश्वरूपदर्शन नामक ग्यारहवें अध्याय से जल अभिमंत्रित करके उस राक्षस के मस्तक पर डाला। गीता के ग्यारहवें अध्याय के प्रभाव से वह शाप से मुक्त हो गया। उसने राक्षस-देह का परित्याग करके चतुर्भुजरूप धारण कर लिया तथा जिन सहस्रों पथिकों का उसने भक्षण किया था, वे भी शंख, चक्र और गदा धारण किये चतुर्भुजरूप हो गये। तत्पश्चात् वे सभी विमान पर आरूढ़ हुए। इतने में ही ग्रामपाल ने राक्षस से कहा : 'निशाचर! मेरा पुत्र कौन है ? उसे दिखाओ।' उसके यों कहने पर दिव्य बुद्धिवाले राक्षस ने कहा : 'ये जो तमाल के समान श्याम, चार भुजाधारी, माणिक्यमय मुकुट से सुशोभित तथा दिव्य मणियों के बने हुए कुण्डलों से अलंकृत हैं, हार पहनने के कारण जिनके कंधे मनोहर प्रतीत होते हैं, जो सोने के भुजबंदों से विभूषित, कमल के समान नेत्रवाले, स्निग्धरूप तथा हाथ में कमल लिये हुए हैं और दिव्य विमान पर बैठकर देवत्व को प्राप्त हो चुके हैं, इन्हींको अपना पुत्र समझो।' यह सुनकर ग्रामपाल ने उसी रूप में अपने पुत्र को देखा और उसे अपने घर ले जाना चाहा। यह देख उसका पुत्र हँस पड़ा और इस प्रकार कहने लगा।

पुत्र बोला : ग्रामपाल ! कई बार तुम भी मेरे पुत्र हो चुके हो। पहले मैं तुम्हारा पुत्र था, किंतु अब देवता हो गया हूँ। इन ब्राह्मण देवता के प्रसाद से वैकुण्ठ धाम को जाऊँगा। देखो, यह निशाचर भी चतुर्भुजरूप को प्राप्त हो गया। ग्यारहवें अध्याय के माहात्म्य से यह सब लोगों के साथ श्रीविष्णुधाम को जा रहा है। अतः तुम भी इन ब्राह्मणदेव से

गीता के ग्यारहवें अध्याय का अध्ययन करो और निरन्तर उसका जप करते रहो। इसमें संदेह नहीं कि तुम्हारी भी ऐसी ही उत्तम गति होगी। तात ! मनुष्यों के लिए साधु पुरुषों का संग सर्वथा दुर्लभ है। वह भी इस समय तुम्हें प्राप्त है। अतः अपना अभीष्ट सिद्ध करो। धन, भोग, दान, यज्ञ, तपस्या और पूर्वकर्मों से क्या लेना है ? विश्वरूप अध्याय के पाठ से ही परम कल्याण की प्राप्ति हो जाती है। पूर्णानंदसंदोहस्वरूप श्रीकृष्ण नामक ब्रह्म के मुख से कुरुक्षेत्र में अपने मित्र अर्जुन के प्रति जो अमृतमय उपदेश निकला था, वही श्रीविष्णु का परम तात्त्विक रूप है। तुम उसीका चिन्तन करो। वह मोक्ष के लिए प्रसिद्ध रसायन है। संसार-भय से डरे हुए मनुष्यों की आधि-व्याधि का विनाशक तथा अनेक जन्मों के दुःखों का नाश करनेवाला है। मैं उसके सिवा दूसरे किसी साधन को ऐसा नहीं देखता, अतः उसीका अभ्यास करो।

श्री महादेवजी कहते हैं : यह कहकर वह सबके साथ श्रीविष्णु के परम धाम को चला गया। तब ग्रामपाल ने ब्राह्मण के मुख से उस अध्याय को सुना, फिर वे दोनों ही उसके माहात्म्य से विष्णुधाम को चले गये। पार्वती ! इस प्रकार तुम्हें ग्यारहवें अध्याय की माहात्म्य-कथा सुनायी है। इसके श्रवणमात्र से महान पातकों का नाश हो जाता है। *('पद्म पुराण' से)*

श्रीमद्भगवद्गीता के ११वें अध्याय के कुछ श्लोक

अर्जुन उवाच

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च ।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः ॥

अर्जुन बोले : हे अन्तर्यामिन् ! यह योग्य ही है कि आपके नाम, गुण और प्रभाव के कीर्तन से जगत अति हर्षित हो रहा है और अनुराग को भी प्राप्त हो रहा है तथा भयभीत राक्षस लोग दिशाओं में भाग रहे हैं और सब सिद्धगणों के समुदाय नमस्कार कर रहे हैं। (३६)

कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन् गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे ।
अनन्त देवेश जगन्निवास त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत् ॥

हे महात्मन् ! ब्रह्मा के भी आदिकर्ता और सबसे बड़े आपके लिए वे कैसे नमस्कार न करें, क्योंकि हे अनन्त ! हे देवेश ! हे जगन्निवास ! जो सत्, असत् और उनसे परे अक्षर अर्थात् सच्चिदानन्दघन ब्रह्म है, वह आप ही हैं। (३७)

त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् ।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम त्वया ततं विश्वमनन्तरूप ॥

आप आदिदेव और सनातन पुरुष हैं। आप इस जगत के परम आश्रय और जाननेवाले तथा जानने योग्य और परम धाम हैं। हे अनन्तरूप ! आपसे यह सब जगत व्याप्त अर्थात् परिपूर्ण है। (३८)

वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशांकः प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च ।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते ॥

आप वायु, यमराज, अग्नि, वरुण, चन्द्रमा, प्रजा के स्वामी ब्रह्मा और ब्रह्मा के भी पिता हैं। आपके लिए हजारों बार नमस्कार ! नमस्कार हो ! आपके लिए फिर भी बार-बार नमस्कार ! नमस्कार !! (३९)

श्रीभगवानुवाच

भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन ।
ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परंतप ॥

श्री भगवान बोले : हे परंतप अर्जुन ! अनन्य भक्ति के द्वारा इस प्रकार चतुर्भुजरूपवाला मैं प्रत्यक्ष देखने के लिए तत्त्व से जानने के लिए तथा प्रवेश करने के लिए अर्थात् एकीभाव से प्राप्त होने के लिए भी शक्य हूँ। (५४)

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः संगवर्जितः ।
निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव ॥

हे अर्जुन ! जो पुरुष केवल मेरे ही लिए सम्पूर्ण कर्तव्यकर्मों को करनेवाला है, मेरे परायण है, मेरा भक्त है, आसक्तिरहित है और सम्पूर्ण भूतप्राणियों में वैरभाव से रहित है, वह अनन्य भक्तियुक्त पुरुष मुझको ही प्राप्त होता है। (५५)

*

✲ BYCULLA STG. WITHOUT PRE-PAYMENT ...
AIRPORT PO. - 400099. ✲ DELHI REGD. NO. DL-11513/2003 WITHOUT PRE-PAYMENT ...

गीता के ग्यारहवें अध्याय का अध्ययन करो और निरन्तर उसका जप करते रहो। इसमें संदेह नहीं कि तुम्हारी भी ऐसी ही उत्तम गति होगी। तात! मनुष्यों के लिए साधु पुरुषों का संग सर्वथा दुर्लभ है। वह भी इस समय तुम्हें प्राप्त है। अतः अपना अभीष्ट सिद्ध करो। धन, भोग, दान, यज्ञ, तपस्या और पूर्वकर्मों से क्या लेना है ? विश्वरूप अध्याय के पाठ से ही परम कल्याण की प्राप्ति हो जाती है। पूर्णानंदसंदोहस्वरूप श्रीकृष्ण नामक ब्रह्म के मुख से कुरुक्षेत्र में अपने मित्र अर्जुन के प्रति जो अमृतमय उपदेश निकला था, वही श्रीविष्णु का परम तात्त्विक रूप है। तुम उसीका चिन्तन करो। वह मोक्ष के लिए प्रसिद्ध रसायन है। संसार-भय से डरे हुए मनुष्यों की आधि-व्याधि का विनाशक तथा अनेक जन्मों के दुःखों का नाश करनेवाला है। मैं उसके सिवा दूसरे किसी साधन को ऐसा नहीं देखता, अतः उसीका अभ्यास करो।

श्री महादेवजी कहते हैं : यह कहकर वह सबके साथ श्रीविष्णु के परम धाम को चला गया। तब ग्रामपाल ने ब्राह्मण के मुख से उस अध्याय को सुना, फिर वे दोनों ही उसके माहात्म्य से विष्णुधाम को चले गये। पार्वती! इस प्रकार तुम्हें ग्यारहवें अध्याय की माहात्म्य-कथा सुनायी है। इसके श्रवणमात्र से महान पातकों का नाश हो जाता है।

('पद्म पुराण' से)

श्रीमद्भगवद्गीता के ११वें अध्याय के कुछ श्लोक

अर्जुन उवाच

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः॥

अर्जुन बोले : हे अन्तर्यामिन्! यह योग्य ही है कि आपके नाम, गुण और प्रभाव के कीर्तन से जगत अति हर्षित हो रहा है और अनुराग को भी प्राप्त हो रहा है तथा भयभीत राक्षस लोग दिशाओं में भाग रहे हैं और सब सिद्धगणों के समुदाय नमस्कार कर रहे हैं। (३६)

कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन् गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे।
अनन्त देवेश जगन्निवास त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत्॥

हे महात्मन्! ब्रह्मा के भी आदिकर्ता और सबसे बड़े आपके लिए वे कैसे नमस्कार न करें, क्योंकि हे अनन्त! हे देवेश! हे जगन्निवास! जो सत्, असत् और उनसे परे अक्षर अर्थात् सच्चिदानन्दघन ब्रह्म है, वह आप ही हैं। (३७)

त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम त्वया ततं विश्वमनन्तरूप॥

आप आदिदेव और सनातन पुरुष हैं। आप इस जगत के परम आश्रय और जाननेवाले तथा जानने योग्य और परम धाम हैं। हे अनन्तरूप! आपसे यह सब जगत व्याप्त अर्थात् परिपूर्ण है। (३८)

वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशांकः प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते॥

आप वायु, यमराज, अग्नि, वरुण, चन्द्रमा, प्रजा के स्वामी ब्रह्मा और ब्रह्मा के भी पिता हैं। आपके लिए हजारों बार नमस्कार! नमस्कार हो! आपके लिए फिर भी बार-बार नमस्कार! नमस्कार!! (३९)

श्रीभगवानुवाच

भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन।
ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परंतप॥

श्री भगवान बोले : हे परंतप अर्जुन! अनन्य भक्ति के द्वारा इस प्रकार चतुर्भुजरूपवाला मैं प्रत्यक्ष देखने के लिए तत्त्व से जानने के लिए तथा प्रवेश करने के लिए अर्थात् एकीभाव से प्राप्त होने के लिए भी शक्य हूँ। (५४)

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः संगवर्जितः।
निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव॥

हे अर्जुन! जो पुरुष केवल मेरे ही लिए सम्पूर्ण कर्तव्यकर्मों को करनेवाला है, मेरे परायण है, मेरा भक्त है, आसक्तिरहित है और सम्पूर्ण भूतप्राणियों में वैरभाव से रहित है, वह अनन्य भक्तियुक्त पुरुष मुझको ही प्राप्त होता है। (५५)

*

* BYCULLA STG. WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO. ...
AIRPORT P.O. - 400099. * DELHI REGD. NO. DL-11513/2003 WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO. ...

परमात्म-प्राप्ति में सहायक १२ बातें

✻ संत श्री आसारामजी बापू के सत्संग-प्रवचन से ✻

'इतना कमाया, इतना खाया, इतना भोगा किंतु अंत में मृत्यु का झटका आयेगा तो सब छूट जायेगा। ऐसी कौन-सी चीज है जिसे मृत्यु नहीं छीनती ? ऐसा कौन-सा सुख है जो एक बार मिलने के बाद नहीं छूटता ? ऐसा कौन-सा पद है जिसको पाने के बाद आदमी उससे च्युत नहीं होता ?...' इस प्रकार के विचार करनेवाला श्रेष्ठ है। ऐसे विचार करनेवालों में भी वह श्रेष्ठ है जो उनके अनुरूप साधन करता है।

शुकदेवजी महाराज राजा परीक्षित से कहते हैं कि 'प्रवृत्ति धर्मवाले और निवृत्ति धर्मवाले, दोनों उस स्वरूप के विषय में विचार कर सकते हैं। किंतु प्रवृत्ति अर्थात् संसार का कामकाज करते हुए ईश्वर को पाने का यत्न करनेवालों की अपेक्षा जो ईश्वर के लिए एकदम लग जाते हैं वे निवृत्ति धर्मवाले श्रेष्ठ हैं।'

प्रतिदिन अभ्यास करके अपनी बुद्धि को सूक्ष्म, सूक्ष्मतर और सूक्ष्मतम बनाने में जो लगा है, वह ६ मास के अंदर ही चित्त के प्रसाद को पाने में सफल हो जाता है।

शास्त्रों में बताये हुए जिन साधनों से बुद्धि परमात्म-अनुभव संपन्न होती है, उन साधनों का आश्रय लें और जिन दोषों से बुद्धि संसार के विकारों से दूषित होती है, उन दोषों से बचें।

चित्त के पाँच दोष हैं : काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय। ये जीव के समय, शक्ति और योग्यताओं को हर लेते हैं। जिसने इन दोषों को जीत लिया है, वह निर्दोष नारायण का अनुभव करने में सफल हो जाता है।

परमात्म-प्राप्ति में निम्नलिखित १२ बातें बड़ी सहायक हैं :

१. आहार की शुद्धि : आप जो अन्न आदि खाते हो वह शुद्ध है कि नहीं ? तामसी भोजन - शराब-कबाब आदि चित्त को अशुद्ध करते हैं। जो भोजन आप खा रहे हो वह ईमानदारी की कमाई का है कि पाप की कमाई का ? शुद्ध हाथों से, शुद्ध पात्रों में, शुद्ध स्थान पर एवं शुद्ध भावों से बनाया हुआ है कि नहीं ? इसका ध्यान रखें।

जो भी भोजन करते हो वह भगवान को भोग लगाकर फिर करें। चौदह दिन भोजन करें तो एक दिन (एकादशी, पूर्णिमा या अमावस्या को) उपवास करके पाचन संस्थान को भी शुद्ध करें।

२. उपयोग में आनेवाली सामग्री की शुद्धता : ऐसा नहीं कि जानवर की हत्या करके बना हुआ महँगा कंबल ले लिया... गाय के चमड़े से बना पर्स लेकर घूमे... नहीं। इन बातों में भी शुद्धता का ख्याल रखना चाहिए।

३. इन्द्रिय-संयम : आँख या कान इधर-उधर जायें तो उन्हें सँभालें... नाक को उत्तेजक परफ्यूम्स (सुगंधयुक्त रसायन) आदि की सुगंध से बचायें... जिह्वा को चटोरेपन से बचायें।

आँखों को संतों के, भगवान के दर्शन में, कानों को सत्संग-श्रवण में, नाक को धूप-चंदनादि की पवित्र सुगंध में, जिह्वा को भगवान के सात्त्विक प्रसाद पाने में लगायें तो विकारों में ले जानेवाली ये इन्द्रियाँ ही आपको भगवान के मार्ग पर ले जाने में सहयोगी हो जायेंगी।

१२ वर्ष ब्रह्मचर्य का पालन करने से मेधा नाड़ी जाग्रत होती है, जिससे दिव्य सामर्थ्य, ऋद्धि-सिद्धि और परमात्म-ज्ञान प्रकट होता है।

४. कर्म करने में संयम : कर्म करने में संयम रखें। जो मन में आया सो कर लिया। नहीं, शास्त्र-अनुकूल कर्म करें। जो वस्तु जहाँ से उठायें, काम पूरा करने के बाद वहीं रख दें। अपने काम में कुशलता से लगें। जैसे कोयले की

खान में जायें और दाग न लगे यह कुशलता है, वैसे ही संसार के कर्म करें किंतु कर्तापन का अहंकार न करें और लापरवाही से कार्य को बिगड़ने न दें, तत्परता से कर्म करें। ऐसा कर्म ईश्वर की भक्ति माना जाता है।

५. अपने दोषों को निकालने का प्रयास : दोषों को छुपाने के लिए स्पष्टीकरण न दें। जो गलती करता है वह तो गलत है ही लेकिन जो गलती करके अपनी गलती मानता नहीं है, वह तो महागलती करता है। कोई हमारी गलती बताता है और हम सफाई ठोंकते हैं तो अपना दोष बढ़ता जाता है।

कोई हमारी सचमुच में गलती बताता है तो उसे धन्यवाद देकर अपनी गलती निकाल दें और यदि ऐसे ही आरोप करता है तो उसे प्रेम से समझायें कि 'मुझे तो ऐसा समझ में आता है। आप मुझे फिर से समझायें।'

इस प्रकार अपनी गलती निकालने में जो तत्पर रहता है उसका मन निर्मल हो जाता है।

६. मन की शुद्धि : मन की शुद्धि का ख्याल करें। मन को ऐसे चिंतन में न लगायें कि मन दूसरों के दोष देखे। दूसरों पर आरोप न लगायें, दूसरों के अवगुण अपने में न लें। करे कोई, और उसे देखकर हम अपना चित्त क्यों बिगाड़ें ? जगत के प्रपंच का ज्यादा चिंतन न करें।

७. मन को युक्ति से समझायें : मन बालक की नाईं है। जैसे - बालक कुछ लेने को कहता है तो पिता कहते हैं : 'अच्छा-अच्छा, फिर ला दूँगा।' ऐसा करके पिता बालक के हित का ध्यान रखते हैं। ऐसे ही मन में कोई अनुचित बात आये तो उसको काटो भी नहीं और उसके अनुकूल होकर बहो भी नहीं। मन को युक्ति से मोड़ लो। **पालयेत् चित्त बालकवत्।**

८. अनुकूल चिंतन करें : चिंतन ऐसा करें जिससे मन की शांति बढ़े, परमात्मा की प्रीति बढ़े, परमात्मा में श्रद्धा हो, संतवचन का सदुपयोग हो। फालतू चिंतन न करें। फरियादात्मक चिंतन न करें। वैरभाव से चिंतन न करें। पवित्र इच्छा को पोषने का चिंतन भले करें, किंतु वैरवाली और अपवित्र इच्छा को पोषने का चिंतन न करें।

जिसकी ऐसी रहनी-करनी होती है, उसका जीवन आनंदमय हो जाता है। उसको रोजी-रोटी के लिए छल-कपट नहीं करना पड़ता। उसकी वाणी मधुमय हो जाती है। उसका जीवन अपने लिए और दूसरों के लिए भी सुखद हो जाता है।

९. सद्भावना रखें : किसीसे वैरभाव न रखें। किसीमें दोषदर्शन न करें। **मुंडे मुंडे मतिर्भिन्ना।** दोषी व्यक्ति के दोषों का कारण कई जन्मों की वासना है, बेवकूफी है, कई जन्मों का उसका अपना स्वभाव है। उसकी जो बातें उचित हैं, शास्त्रानुकूल हैं उनमें सहमत हो जायें। बाकी की बातों में उसका रास्ता अलग, आपका अलग...। किंतु सब आपके स्वभाव के अनुकूल ही हों और जैसा आप चाहते हैं, ऐसा ही सब लोग करें - यह कोई जरूरी नहीं है।

आप अपने कर्तव्य पर ध्यान दो। बाकी 'वह ऐसा करता है... वह वैसा करता है...' ऐसा सोचकर अपने भावों को बिगड़ने मत दो। दूसरों के राग-द्वेष का कचरा अपने में मत लाओ, दूसरों के चढ़ाने से फूल मत जाओ। आप अपना स्वभाव मेल-जोलवाला रखो, प्रेमभाव से भरा रखो।

पुराणों में कथा आती है कि राजा पुरुरवा अपने पुण्य-प्रताप से स्वर्ग में गये। इन्द्र ने उनका स्वागत-सत्कार किया और अन्य देवताओं का परिचय दिया कि 'ये अग्निदेवता हैं, ये वायुदेवता हैं, ये वरुणदेवता हैं...' पुरुरवा सभीको प्रणाम करते गये। आगे गये तो बताया कि ये कामदेव (अर्थदेव) हैं। पुरुरवा को काम से उपरामता थी तो कामदेव का क्या स्वागत करते ?

जब कामदेव को प्रणाम नहीं किया तो उनको बुरा लगा कि 'सबको प्रणाम किया लेकिन हमको नहीं किया। अब हम इनकी खबर लेंगे।'

पुरुरवा धरती पर आये तो राजवैभव तो खूब मिला किंतु कामपूर्ति के साधन का उपयोग न कर सके। उर्वशी जैसी अप्सरा उन्हें छोड़कर चली

* BYCULLA STG. WITHOUT PRE-PAYMENT ...
AIRPORT PO. - 400099. * DELHI REGD. NO. DL-11513/2003 WITHOUT PRE-PAYMENT ...

गयी। तब वे पागल जैसे हो गये।

स्वर्ग में कामदेव का अपमान करने का फल उन्हें सहन करना पड़ा। इसलिए जो अच्छे हैं, बड़े हैं उनसे भी मिलें और जो छोटे हैं उनका अपमान न करें। तू-तड़ाके की भाषा छोड़ दें। अपने स्वभाव से दुश्मन बनाने की आदत, अपमान करने की आदत को तुरंत निकाल दें। एक-दूसरे के प्रति दुर्भाव मन को शांत नहीं होने देता।

१०. भगवत्शांति का अभ्यास करें : मन को शांत करने का प्रयास करें। हृदय में भगवदानंद उभारें। इससे मन शुद्ध होगा, बुद्धि शुद्ध होगी। बुद्धि शुद्ध होगी तो शुद्धस्वरूप का चिंतन करने में सफल होगी।

११. भगवान में महत्त्वबुद्धि रखें : शरीर में महत्त्वबुद्धि न रखें। 'शरीर पहले नहीं था और बाद में नहीं रहेगा किंतु शरीर को चलानेवाला मेरा आत्मा-परमात्मा पहले था, बाद में भी रहेगा और अभी भी उसकी सत्ता और प्रेरणा मिल रही है।' ऐसा स्मरण बनाये रखें।

१२. आत्मविचार करें : सदैव ऊँचे विचार करें, आत्मविचार करें। अनुकूल परिस्थितियाँ आपको बहा न ले जायें, प्रतिकूल परिस्थितियाँ आपको दबा न दें इसके लिए सावधान रहें। उनको बहने दें, गुजरने दें। धैर्य न छोड़ें।

जो इन १२ बातों का पालन करता है उसके लिए भगवत्प्राप्ति सहज हो जाती है।

सेवाधारियों व सदस्यों के लिए विशेष सूचना

(१) कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नगद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजा करें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अतः अपनी राशि मनी ऑर्डर या ड्राफ्ट द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

(२) 'ऋषि प्रसाद' के नये सदस्यों को सूचित किया जाता है कि आपकी सदस्यता की शुरुआत पत्रिका की उपलब्धता के अनुसार कार्यालय द्वारा निर्धारित की जायेगी।
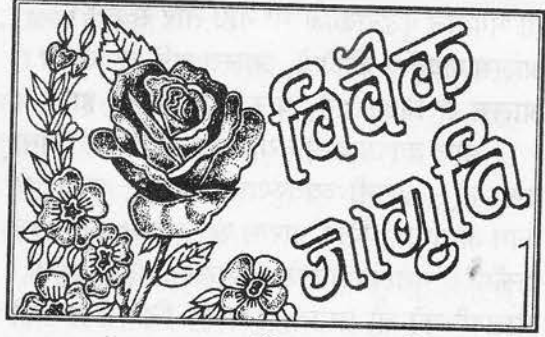
प्रमाद ही मृत्यु है

✻ संत श्री आसारामजी बापू के सत्संग-प्रवचन से ✻

जो सेठ लोग हैं, साहब लोग हैं वे शारीरिक काम करने से कतराते हैं। उनके मन में यह भ्रांति घुस जाती है कि 'हम तो बौद्धिक काम करते हैं, हमें शारीरिक श्रम की क्या जरूरत ?' अगर ऐसा है तो तुम भोजन भी मन से ही कर लिया करो, नींद भी मन से ही ले लिया करो।

जब तुम्हारा शरीर भोजन भी करता है और नींद भी लेता है तो फिर उससे काम भी लो। केवल मानसिक काम करोगे तो नींद ठीक से नहीं आयेगी, आलस्य बढ़ जायेगा, व्यर्थ की तंद्रा आ जायेगी। इससे प्रमाद का जन्म होगा। प्रमाद से विस्मृति होगी और विस्मृति से सर्वनाश हो जायेगा।

आजकल अधिकतर ऐसा ही होता है। एक कारखाने का मालिक अपनी पत्नी से कहकर गया कि 'देख, मैं कारखाने के काम से बाहर जा रहा हूँ। परसों वापस आ जाऊँगा। तुम प्रबंधक को बुलाकर समझा देना कि इतना उत्पादन करना है और गुणवत्ता को इस-इस प्रकार से बनाये रखना है।'

दो दिन बाद वापस आने पर मालिक ने अपनी पत्नी से पूछा : ''संदेश दे दिया था न ? कितना उत्पादन हुआ ?''

पत्नी : ''मैं तो भूल गयी...''

यह प्रमाद है, विस्मृति है। आलस्य से निद्रा, निद्रा से प्रमाद, प्रमाद से विस्मृति और विस्मृति से आदमी की योग्यताओं का नाश हो जाता है। जो विस्मृति और लापरवाही के गर्त में डूबे हुए हैं, उनको

तो भगवान पुंडरीकाक्ष भी नहीं तार सकते !

आलस कबहुँ न कीजिये, आलस अरि सम जानि।
आलस ते विद्या घटे, बल बुद्धि की हो हानि ॥

आज का आदमी क्या करता है ? 'मैं इतना कमा लूँ... इतनी व्यवस्था कर लूँ... बुढ़ापे में काम आयेगा... फिर आराम से भगवान का भजन करूँगा।' मतलब बुढ़ापे में आलसी होकर रहूँगा। आलसी को तो प्रमाद होता है, जिससे उसकी बुद्धि क्षीण हो जाती है। वह क्या भगवान को जानेगा ?

शरीर में थकान है तो सो जाना अपराध नहीं है, जरूर सोना चाहिए। किंतु आवश्यकता न होने पर भी लेटे रहना और पड़े-पड़े समय बरबाद करना - यह आलस्य है। जो आलसी हैं, आलस्य करके पड़े रहते हैं, उन्हें बिनजरूरी नींद आयेगी, स्वप्न आयेंगे, दिन में भी स्वप्नदोष हो सकता है। प्रगाढ़ नींद नहीं आयेगी। इसीसे प्रमाद का जन्म होगा।

आलस्यो हि मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपुः।

आलस्य बड़ा शत्रु है। आलस्य से ही लापरवाही का रोग लग जाता है। जो लापरवाह लोग हैं उनकी तमाम योग्यताएँ नष्ट हो जाती हैं। जिनके सिर पर कोई जिम्मेदारी नहीं है या जो जिम्मेदारीपूर्वक काम नहीं करते, वे खतरा मोल ले लेते हैं।

आजकल तो अपने देश में जहाँ देखो वहाँ लापरवाही, लापरवाही और लापरवाही... लोग दिन में भी सोते हैं। जिसको बहुत बीमार होना हो वह दिन में सोता रहे। हाँ, कोई बीमार है, बालक या वृद्ध है अथवा रात को जगा है तो अलग बात है। किंतु स्वस्थ व्यक्ति अपने को बीमार मानकर आलसी होकर दिन में सोता रहेगा तो प्रमादी हो जायेगा, उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जायेगी।

भगवान बुद्ध ने कहा है : 'प्रमाद मनुष्य को मौत के मुँह में धकेल देता है। वह मनुष्य का परम शत्रु है।'

'मैं तो भूल गयी... मुझे याद ही नहीं रहा...' यह प्रमाद है, जो छोटे मन की पहचान है। यदि कोई जरा-जरा बात में भूल जाता है तो वह भ्रांति से अपने को भले बड़ा मान ले किंतु है मन का छोटा।

हाँ, कोई जगत को सत्य नहीं मानते हैं और अपने स्वरूप में जगे हैं, गुणातीत महापुरुष हैं, वे भले सारा ब्रह्मांड भूल जायें किंतु जो गुणों में रम रहा है वह भूलता है तो प्रमाद है।

पाने योग्य को न पाना और न पाने योग्य को पाने में सार समझना, करने जैसे काम न करना और न करने जैसे काम करते रहना - ये सभी प्रमाद के अंतर्गत आते हैं।

'मेरे सौ बेटे मर गये... हाय कष्ट, हाय कष्ट !'- ऐसा विलाप करते हुए धृतराष्ट्र बड़े दुःखी हो रहे थे। विदुरजी का उपदेश भी उन्हें सांत्वना नहीं दे पा रहा था। फिर विदुरजी ने सनकादि ऋषियों का आह्वान किया। सनकादि ऋषियों ने धृतराष्ट्र का मोह दूर करने के लिए उन्हें उपदेश देते हुए कहा :

'धृतराष्ट्र ! तुम बोलते हो कि मेरे बेटे मर गये परंतु वास्तव में कोई मरता नहीं है। स्थूल शरीर और सूक्ष्म शरीर के मेल को जन्म बोलते हैं और उनके वियोग को मृत्यु बोलते हैं; जीव तो कभी मरता नहीं है। फिर भी तुम पूछते हो कि मृत्यु किसे बोलते हैं ? तो सुनो :

प्रमादो हि मृत्यु आख्याम इति श्रुतौ।

प्रमाद ही मृत्यु है ऐसा श्रुति कहती है।'

अपने आत्मा को नहीं जानना और देह को, जो अपनी नहीं है, 'मैं' मानना तथा शाश्वत सुख को न पाना और नकली सुख में भटकना - यह बड़े-में-बड़ा प्रमाद है...

महत्त्वपूर्ण निवेदन

सदस्यों के डाक-पते में परिवर्तन अगले अंक के बाद के अंक से कार्यान्वित होगा। जो सदस्य १३५वें अंक से अपना पता बदलवाना चाहते हैं, वे कृपया जनवरी २००४ के अंत तक अपना नया पता भेज दें।

* BYCULLA STG. WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO. ...
AIRPORT PO. - 400099. * DELHI REGD. NO. DL-11513/2003 WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO. ...

बारहवीं पीढ़ी का क्या होगा ?

✻ संत श्री आसारामजी बापू के सत्संग-प्रवचन से ✻

एक सेठ ने अपने मुनीम से कहा : ''जरा हिसाब लगाओ कि हमारी जमा पूँजी से कितनी पीढ़ियाँ आराम से खा सकेंगी ?''

मुनीम ने हिसाब लगाकर कहा : ''ब्याज की १० से २० % रकम तो उसकी उगाही में चली जाती है । इस हिसाब से भी देखें तो हमारे पास ११ पीढ़ियों के लिए पर्याप्त धन है ।''

सेठ सिर कूटते हुए बोला : ''उसके बाद क्या होगा ? मेरी १२वीं पीढ़ी क्या खायेगी ? ११वीं पीढ़ी तक तो धन बना रहेगा, ब्याज से गुजारा होता रहेगा लेकिन ब्याज डूबते-डूबते पूँजी भी डूब जायेगी तो १२वीं पीढ़ी क्या खायेगी ?'' इस प्रकार सेठ को चिन्तारूपी दीमक ने खोखला करना शुरू कर दिया ।

उस सेठ के बेटे सत्संगी थे, समझदार थे । उन्होंने पूछा : ''पिताजी ! आप बड़े उदास लग रहे हैं । आप पर कोई दवाई भी असर नहीं कर रही है, क्या कारण है ?''

सेठ : ''बेटा ! हमारी १२वीं पीढ़ी का क्या होगा - यह चिन्ता मुझे दिन-रात सताती है ।''

पिता का दुःख दूर करना पुत्र का कर्तव्य है । सेठ के बेटों ने उसकी कई जगह जाँच करवायी परंतु डॉक्टरों ने कहा कि यह चिन्तारूपी बीमारी औषधियों से नहीं मिटती ।

चिन्ता ऐसी डाकिनी काटी कलेजा खाय ।
वैद्य बेचारा क्या करे कहाँ तक दवा खिलाय ॥

आखिर वे किसी महात्मा के पास गये । महात्मा ने कहा :

''गाँव के बाहर, नदी के किनारे छोटी-सी झोंपड़ी में एक ब्रह्मचारी रहता है । सेठ से कहो कि सुबह जल्दी नहा-धोकर, एक थाली में सीधा-सामान, फल-दक्षिणा आदि सजाकर उस ब्रह्मचारी के पास जाय ।

लोभी आदमी के पास अपने दुःखनिवारण के लिए दान करने के सिवाय अन्य कोई चारा ही नहीं है । लोभी आदमी अगर दान नहीं करता तो समझो, वह अपने लिए कब्र खोदता है । दान न करने से वह अधिक दुःखी होता है । इसलिए अपने पिता से एक थाली भरकर सीधा-सामान आदि का दान करवाओ और जो ब्रह्मचारी नदी किनारे रहता है, उसीको यह दान दिलवाना ।''

बेटों ने कहा : ''ठीक है । अगर १००-२००-५०० रुपयों में हमारे पिताजी ठीक हो जाते हैं तो बढ़िया बात है ।''

दूसरे दिन सुबह सेठ थाली सजाकर उस ब्रह्मचारी के पास गया और उसको देते हुए बोला :

''लीजिये, महाराज !''

ब्रह्मचारी : ''आज का सीधा तो मेरे पास पड़ा है, अतः इसकी आवश्यकता नहीं है ।''

सेठ : ''आज का पड़ा है तो क्या फर्क पड़ता है ? कल के लिए ले लीजिये ।''

ब्रह्मचारी : ''जिसने आज सुबह किसीको भेजा है, वह कल भी भेजेगा । मैं संग्रह क्यों करूँ ? पक्षी अभी खाते हैं और दो घंटे बाद का उन्हें पता नहीं, फिर भी डाल पर आनंद से किल्लोल करते हैं । मेरे पास तो आज के लिए है ।''

सेठ : ''कल के लिए रख लीजिये ।''

ब्रह्मचारी : ''कल की चिन्ता मैं आज से क्यों करूँ ? जो कल मुझे जीवित रखेगा, वह कल खिलायेगा भी न ! शिशु के आने से पूर्व जिसने माँ के शरीर में दूध की व्यवस्था की, उसका भरोसा छोड़कर मुझे चिन्ता करना क्यों सिखाते हो ? मैं क्या इतना पापी हूँ कि भगवान पर भरोसा छोड़कर सीधे की थाली पर भरोसा करूँ ? रुपये-पैसे पर भरोसा करूँ ? मुझे भगवान पर भरोसा करने दो ।

आपको रुपयों पर भरोसा करना है तो करते रहो, मकान-दुकान पर, ११ पीढ़ियों पर भरोसा करना है तो करते रहो। मैं तो उसी एक पर भरोसा करूँगा जो हजारों पीढ़ियों के बदलने पर भी नहीं बदलता। वह मेरा नाथ मेरे साथ है, मैं उसी पर भरोसा करूँगा।

सेठ ! आपका सीधा-सामान, आपके फल एवं दक्षिणा आपको ही मुबारक हों, हम नहीं ले सकते।''

सेठ : ''महाराज ! आप गजब के साधु हैं ! जरा तो आगे का सोचिये !''

ब्रह्मचारी : ''आगे का तो यही सोचना है कि आगे की कोई चिन्ता ही न रहे। हर रोज काम किया, खाया-पिया और पत्तल फाड़ी। जो हो रहा है अच्छा है, जो होगा वह भी अच्छा होगा - यह नियम सरकार का है, परमेश्वर का है। सेठजी ! आपका यह सीधा-सामान हम नहीं ले सकते।''

सेठ : ''महाराज ! आप कहते हैं कि सीधा-सामान वापस ले जाओ तो ठीक है। इस बारे में बाद में सोचूँगा, अभी थोड़ी देर बैठने तो दीजिये। इधर मुझे अच्छा लग रहा है। महाराज ! आपके पास ऐसा क्या है कि आपको देखते रहने की, आपके वचन सुनते रहने की इच्छा होती है ?

महाराज ! मेरे पास इतना धन है कि मेरी ११ पीढ़ियों तक का गुजारा हो सके। फिर भी मुझे चिन्ता सताती है कि मेरी १२वीं पीढ़ी का क्या होगा ?''

ब्रह्मचारी : ''सेठजी ! आपमें और मुझमें यही फर्क है कि मैं निश्चिंत नारायण के साथ एक होकर जीता हूँ और आप चंचल माया एवं बदलनेवाले संसार के साथ एक हो गये हैं। जो संसार क्षण-क्षण बदलता एवं नष्ट होता रहता है, खपता रहता है उसीके साथ एक होकर आप भी खप रहे हैं, नष्ट हो रहे हैं जबकि मैं अबदल तत्त्व के साथ अपनी एकता करके अठखेलियाँ करता हूँ।

सेठजी ! अगर पूत सपूत हैं तो जहाँ भी जायेंगे, अपने पुरुषार्थ से कमा लेंगे। फिर भी अपनी एकाध पीढ़ी के लिए रखो, ठीक है। ११ पीढ़ियों तक की व्यवस्था है, फिर चिन्ता क्यों करते हो ? हो सकता है आनेवाली पीढ़ी इससे भी दस गुना ज्यादा कमा ले ! आप जब ११ पीढ़ियों के लिए संपत्ति कमा सकते हो तो दूसरा भी ११ पीढ़ियों के लिए कमा सकता है।

टॉर्च दस मीटर दूर तक रोशनी करती है तो क्या केवल दस मीटर तक ही रोशनी स्थिर रहती है ? नहीं, चलते जाते हो तो रोशनी भी आगे बढ़ती जाती है। ऐसे ही जैसे-जैसे जीवन बीतता जाता है, वैसे-वैसे सब काम होते जाते हैं।

अगर चिन्तन करना है तो परमात्मा का करो एवं चिन्ता करनी है तो इस बात की करो कि 'यह श्वास बाहर निकला... क्या पता, भीतर आये या न आये और कुटुम्बी श्मशान में ले जायें... नश्वर का चिन्तन करते-करते जीवन बिताया है तो मेरी क्या गति होगी ? भक्तिरस नहीं पाया, ज्ञानरस नहीं पाया, कर्मरस नहीं पाया तो विषय-विकारों में तबाह न हो जाऊँ...'

करने, मानने एवं जानने की शक्ति का सदुपयोग करो। मिटनेवाले की गहराई में जो अमिट तत्त्व है, उसीको जानने में अपनी मति को लगाओ।''

इस प्रकार ब्रह्मचारी ने सेठ को सत्संग सुनाया। सेठ गद्‌गद हो उठा एवं वास्तव में सेठ बन गया। मैं चाहता हूँ कि आप भी वास्तविक सेठ बनो। बाहर का जितना कुछ मिला है, उतने में आनंदित एवं संतुष्ट रहकर भीतर का रस बढ़ाते जाओ।

जप, तप, सेवा, पूजा, यज्ञ, होम, हवन, दान, पुण्य ये सब चित्त को शुद्ध करते हैं, चित्त में पवित्र संस्कार भरते हैं। प्रतिदिन कुछ समय निष्काम कर्म अवश्य करने चाहिए जिससे चित्त के कोष में कुछ आध्यात्मिकता की पूँजी जमा हो।

* BYCULLA STG. WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO. ...
AIRPORT PO. - 400099. * DELHI REGD. NO. DL-11513/2003 WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO. ...

✲ संत श्री आसारामजी बापू के सत्संग-प्रवचन से ✲

सत्य का बल

एक बार किसी देश में अकाल पड़ा । ३-४ साल तक अकाल पड़ने से राजा का कोष खाली हो गया । गाय-भैंसों को खिलाने के लिए तिनका भी न रहा और मनुष्य के लिए अन्न का दाना तक न रहा । मनुष्य और पशु-पक्षी मरने लगे । उस जमाने में परदेश से स्टीमर द्वारा अन्नादि मँगवाने की व्यवस्था भी न थी ।

आखिर राजा गया किन्हीं महात्मा की शरण में । महात्मा ने कहा : ''लोगों के पाप बहुत बढ़ गये हैं, इसलिए अकाल पड़ा है । मेरे पास इतना योगबल नहीं है कि मैं समष्टि के पापों को दबाकर बरसात करा सकूँ ।''

राजा : ''महाराज ! मैं अपने लिए प्रार्थना नहीं करता । प्रजा ने पाप किये हैं किंतु उन गूँगी गायों ने क्या पाप किये हैं ? उनके बछड़ों ने क्या पाप किये हैं ? उनके लिए बरसात हो जाय ऐसा कोई उपाय बताइये ।''

महात्मा ध्यानमग्न हो गये । ध्यान का बड़ा माहात्म्य है । ध्यान करने से मन बुद्धि में लीन होता है और बुद्धि सत्यस्वरूप परमात्मा में गोता मारती है । इसलिए सच्चा रहस्य प्रकट हो जाता है ।

महात्मा ने कहा : ''राजन् ! तुम्हारे नगर में तुलाधार नाम का एक व्यापारी रहता है । यदि तुम उसे भगवान से प्रार्थना करने के लिए रिझा सको और वह प्रार्थना करे तो बरसात हो जायेगी ।''

दूसरे दिन सुबह राजा साहब तुलाधार के द्वार पर आये और उनसे प्रार्थना करने लगे कि ''कई मनुष्य अकाल का ग्रास बन गये हैं । गाय-भैंस आदि पशु भी मरते जा रहे हैं । तुलाधार ! मेरे लिए नहीं, राजकोष के लिए नहीं, किंतु कम-से-कम इन गूँगे प्राणियों के लिए आप बरसात कराने की कृपा करें ।''

तुलाधार : ''महाराज ! यह आप क्या कह रहे हैं ? मैं कोई साधु नहीं, योगी नहीं, मैं तो दुकान पर सामान तौलता हूँ ।''

''भले आप सामान तौलते हैं किंतु आप सत्य में स्थित हैं । आपने कभी झूठ नहीं बोला । आपने कभी किसीको कम सामान देकर ज्यादा पैसे नहीं लिये । मुझे एक महात्मा ने कहा है कि यदि आप बरसात के लिए भगवान से प्रार्थना करेंगे तो बरसात जरूर हो जायेगी ।''

''मुझमें इतनी ताकत नहीं कि मैं भगवान से कह दूँ और बरसात हो जाय, किंतु किसी महात्मा ने कहा है तो संत के वचन झूठ नहीं हो सकते ।''

तुलाधार ने तराजू उठायी और कहा : 'हे तुला ! यदि मेरे द्वारा कभी बेईमानी न हुई हो तो दोनों पलड़े स्थिर हो जायें ।'

खाली तराजू तो हिलती है किंतु तुलाधार के ऐसा कहते ही दोनों पलड़े स्थिर हो गये ! ऐसा तुलाधार ने दो-तीन बार किया, फिर कहा : 'जब तराजू का काँटा दर्शा रहा है कि मैं सत्य पर ही अडिग रहा हूँ तो हे सत्यस्वरूप ईश्वर ! लोगों के कर्म चाहे जैसे भी हों किंतु तुलाधार आपसे प्रार्थना करता है कि अब आप इंद्र को आदेश दें ताकि वृष्टि हो जाय ।'

सत्य में बड़ी शक्ति होती है !

तुलाधार प्रार्थना करते रहे । इतने में तो आकाश में बादल मँडराने लगे और ऐसी बरसात हुई कि राजा को तीन दिन तक तुलाधार के घर पर ही रुकना पड़ा !

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप ।
जाके हिरदे साँच है, ताके हिरदे आप ॥

गाँधीजी की सत्यनिष्ठा

बुद्धि को बाहर के सुख की पक्षपातिनी न बनाकर सत्य की पक्षपातिनी बनाइये, जैसे गाँधीजी ने बनायी। गाँधीजी ने गरीबों का दुःख दूर करने का ठान लिया और अंग्रेजों द्वारा गरीबों के शोषण की जानकारी पाने के लिए कि अंग्रेजों को कितनी कमाई होती है और वे इन्हें कितनी तनख्वाह देते हैं, इसके विवरण की फाइल अंग्रेजों से माँगी। लेकिन अंग्रेज वह फाइल काहे को देंगे ? उन्होंने फाइल देने के लिए मना कर दिया।

गाँधीजी ने कहा : 'हम सत्याग्रह करेंगे, भूख हड़ताल करेंगे।'

गाँधीजी के सत्याग्रहियों में से एक व्यक्ति अंग्रेजों के दफ्तर में ऊँचे पद पर काम करता था। उसने देखा कि फाइल न मिली तो मामला बिगड़ जायेगा। रात्रि को दफ्तर में जाकर वह चुपके से उस फाइल को ले आया, जिसमें सारी जानकारियाँ थीं और सुबह में गाँधीजी को देते हुए बोला कि ''अंग्रेज अपने पोल की फाइल देनेवाले नहीं थे। मैं यह फाइल चुराकर ले आया हूँ। उनकी कितनी कमाई होती है और वे कितनी तनख्वाह देते हैं, इसका सारा विवरण इस फाइल में है। आप सारी जानकारी देख लीजिये और इसकी प्रतिलिपि बनवा लीजिये।''

गाँधीजी गंभीर हो गये और बोले : ''जो सत्य सारी सृष्टि का पालक-पोषक और हितैषी है, उसका पक्ष छोड़कर हम असत्य में जायें ? तुम फाइल ले आये हो, गलत किया तुमने। अब इसे देखना मत। मैं यही फाइल उन अंग्रेजों के हाथों से ही लूँगा।''

सदाचार का मतलब केवल सत्य बोलना ही नहीं है बल्कि सत्य-आचरण करना भी है। कई लोग बुद्धिमान तो होते हैं लेकिन लोभ का पक्ष लेते हैं और दुराचरण करके, मोहयुक्त आचरण करके अपनी शक्ति को कुंठित कर देते हैं। ऐसा कोई माई का लाल वकील पैदा नहीं हुआ, जिसका फोटो नोटों पर छपता हो, भारत उसे राष्ट्रपिता के नाम से पुकारता हो, आदर से देखता हो। नहीं...

लेकिन गाँधीजी ने सत्य का समर्थन किया, सुख का नहीं। 'चाहे असुविधा सहनी पड़े, चाहे अंग्रेजों का कोप सहना पड़े लेकिन हम सत्य को नहीं छोड़ेंगे।' - ऐसा उनका मत था। कुछ समय में वातावरण ऐसा जमा कि अंग्रेजों ने अपने हाथों से गाँधीजी को फाइल दी। जो फाइल चुराकर लायी गयी थी, वही अंग्रेजों के हाथों से मिली और गाँधीजी सफल हुए। अंग्रेजों को शोषण से बाज आना पड़ा और किसानों की पुष्टि हुई। आपको दुःख मिटाना है तो अपने दुःख की चिंता न करो अपितु सत्यनिष्ठ होकर औरों के दुःख मिटाने में लग जाओ, आपका बल बढ़ जायेगा।

'देवरहा बाबा से मिलना है'

बुद्धि का उद्गम-स्थान चैतन्य परमात्मा है। जो उसका ध्यान करते हैं, सुमिरन करते हैं उनकी बुद्धि में सत्त्व और मन में संकल्प-सामर्थ्य आता है।

देवरहा बाबा हमारे परिचित संत थे। इंदिरा गाँधी उनके पास कई बार जाती थीं। हमने बाबा के जीवन का एक प्रसंग सुना है। एक बार जब इंदिरा गाँधी उनके पास गयीं तो उनके सचिव ने बाबा के सेवक से कहा : 'भारत की प्रधानमंत्री इंदिराजी आयी हैं। बाबाजी से कहो कि उन्हें दर्शन दें।'

सेवक दौड़कर बाबाजी के पास गया और बोला : ''गुरुजी, गुरुजी ! भारत की प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी आयी हैं।''

बाबाजी : ''उनसे कहो कि बैठें। हम नियम कर रहे हैं।''

सेवक ने बाहर आकर कहा : ''आप लोग बैठें। गुरुजी अभी नियम कर रहे हैं।''

इंदिरा गाँधी के साथ जो डी.आई.जी. आया था, उसने कहा : ''इंदिराजी को देर हो रही है। जाओ, जल्दी बुलाकर लाओ। कहो, जरा दर्शन दे दें।''

सेवक पुनः बुलाने गया और बोला : ''गुरुजी ! इंदिराजी को कहीं जाना है। उनके साथ तमाम झमेला आया है। कई पुलिसवाले, कई बड़े-बड़े साहब भी साथ में हैं। गुरुजी ! उन्हें देर हो रही है, उनको आप दर्शन दे दें।''

बाबाजी : ''जा, हम आते हैं। बैठने को कह दे।''

R.N.I. NO. 48873/91 ...
BYCULLA STG. WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO. 236. REGD NO. TECH/47- ...
AIRPORT PO. - 400099. DELHI REGD. NO. DL-11513/2003 WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO.- U(C) 232/2003 ...

सेवक गया तो साथ आये साहबों ने फिर से कहा : ''जाओ, जल्दी बुला लाओ।''

सेवक ने जाकर फिर से कहा : ''गुरुजी! भारत की प्रधानमंत्री दर्शन करने के लिए आयी हैं।''

बाबाजी : ''प्रधानमंत्री हैं, महारानी हैं तो क्या हुआ ? हम पहले हमारे महाराज से मिलेंगे, बाद में आयेंगे। बैठी है तो बैठने दे, नहीं तो भले जाय। हम उसको बुलाने नहीं गये थे। उसकी श्रद्धा है तो आती है।''

सेवक सिकुड़कर बैठ गया। देवरहा बाबा अपना नियम पूरा करके गये। इंदिरा ने उन्हें प्रणाम किया। तब बाबा ने कहा : ''इंदिरा ! तुम भारत की प्रधानमंत्री हो किंतु यह जरूरी नहीं है कि तुम आओ और हम मिलने को तैयार रहें। तुम्हारे या किसी प्रधानमंत्री के कारण सूर्य नहीं चमकता है, तुम लोगों के कारण धरती में रस नहीं है; धरती में रस है भगवान की दया से और वह रस बरसता है उनके प्यारे संतों की करुणा-कृपा से। तुम्हारा राज्य भी तुम्हारे कारण नहीं है, प्रजा के कारण है। हम दो मिनट बैठे और हमारा सेवक तीन बार संदेश लेकर आया कि 'प्रधानमंत्री आयी हैं' तो हम क्या करें ?

बेटी ! अब किन्हीं संत के पास जाओ तो इस प्रकार का आदेश कभी भी मत चलाना कि मुझे दर्शन देने के लिए वे बाहर आ जायें।''

इस प्रसंग से हमें चार बातें सीखने को मिलती हैं :

१. ब्रह्मज्ञानी संतों के दर्शन एवं कृपा का लाभ लेना हो तो हमें अत्यंत विनम्र एवं उनके अनुकूल बनना चाहिए। अपनी पद-प्रतिष्ठा का आडंबर प्रदर्शित कर उन्हें अपने मन के अनुसार चलाने का दुःसाहस नहीं करना चाहिए।

२. जो भयभीत या स्वार्थी होते हैं वे ही सच्चाई सुनाने का सामर्थ्य नहीं रखते। ब्रह्मनिष्ठ महापुरुष भय व स्वार्थ से परे परमात्म-पद में पहुँचे हुए होते हैं। इसलिए वे आपकी पद-प्रतिष्ठा से अप्रभावित रहते हुए निर्भयतापूर्वक एवं निःस्वार्थ भाव से आपके दोषों से आपको अवगत कराके उन्हें दूर करने का मार्ग भी बता सकते हैं। वे ही आपका सच्चा हित कर सकते हैं।

३. ब्रह्मज्ञानी संत के सेवक को अपने गुरुदेव की ध्यान-समाधि में कभी भी विक्षेप नहीं पहुँचाना चाहिए। जगत के सभी पदों से ब्रह्मपद सर्वोपरि है यह सदैव याद रखना चाहिए। उसे व्यवहारकुशल और विवेकशील होना चाहिए।

४. ब्रह्मज्ञानी संत कभी बाहर से कठोर व्यवहार करते हुए भी दिखाई दे सकते हैं लेकिन भीतर से बड़े कोमल और कृपालु होते हैं। देवरहा बाबा ने इंदिरा गाँधी को हितदृष्टि से डाँट तो दिया लेकिन अंत में उनका संबोधन 'बेटी' कितना प्रेममय, कृपामय है !

विद्यार्थी-प्रश्नोत्तरी

✲ संत श्री आसारामजी बापू के सत्संग-प्रवचन से ✲

प्रश्न : गुरुजी ! धर्म के लक्षण क्या हैं ?

उत्तर : धैर्य, क्षमा, संयम, चोरी न करना, पवित्रता, सत्य, क्रोध न करना, निर्भयता - ये सब धर्म के लक्षण हैं।

प्रश्न : धर्म क्या है ?

उत्तर : बेटा ! जो परमेश्वर सारे विश्व को धारण कर रहा है, उसको जानने की रीति का नाम है धर्म। यह दो प्रकार का होता है।

(१) मानवीय धर्म (२) सामाजिक धर्म

मानवीय धर्म है अहिंसा। एक-दूसरे को मारना नहीं चाहिए। किसी प्राणी अथवा जीव-जंतु को परेशान नहीं करना चाहिए। किसीको कटु वचन के द्वारा दुःख नहीं पहुँचाना चाहिए।

दूसरा है सामाजिक धर्म। बन सके उतना दूसरों की सेवा करना यह सामाजिक धर्म है।

प्रश्न : गुरुजी ! विद्यार्थी का धर्म क्या है ?

उत्तर : विद्यार्थी का धर्म है विद्या सीखना। माता-पिता को प्रणाम करके उनके आशीर्वाद लेना। ब्रह्मचर्य का पालन करना। बाल्यकाल में जो सुसंस्कार मिलेंगे, आगे चलकर वे ही जीवन में काम आयेंगे।

विद्यार्थीकाल बड़ा कीमती काल है। इसमें अगर बुरी संगत, बुरी आदतें लग गयीं, बुरे कर्म हो गये तो जीवन लाचार, पराधीन, पराश्रित, दुःखी और रुग्ण हो जायेगा। अपने लिए, परिवार, समाज तथा देश के लिए भी बोझा हो जायेगा।

विद्यार्थी को चाहिए कि वह संयमी रहे, व्यायाम-आसन आदि करके स्वस्थ रहे और जप-ध्यान करके अपनी सुषुप्त चेतना को जाग्रत करे। इस प्रकार जीवन का सर्वांगीण विकास करे।

विद्यार्थी कभी नकारात्मक न सोचे, पलायनवादिता के या हलके विचार न करे। अनुत्तीर्ण हो जाय तब भी भागने के या आत्महत्या के विचार न करे, फिर से पुरुषार्थ करे तो अवश्य सफल होगा।

प्रयत्न करो, प्रयत्न करो, अवश्य सफलता प्राप्त करोगे।

वह कौन-सा उकदा है जो हो नहीं सकता ?
तेरा जी न चाहे तो हो नहीं सकता।
एक छोटा-सा कीड़ा पत्थर में घर करे।
तो इन्सान क्या दिले दिलबर में घर न करे ?

प्रश्न : गुरुजी ! ईश्वर कैसा है ?

उत्तर : कोई कैसा है यह उससे बड़ा ही बता सकता है। ईश्वर से बड़ा कोई नहीं है, इसलिए ईश्वर कैसा है - यह बताना मुश्किल है। किंतु ईश्वर है यह जरूर बता सकते हैं।

मत करो वर्णन हर बेअंत है...

उसका कोई अंत नहीं है। ईश्वर कैसा है इसका वर्णन कोई नहीं कर सकता। जैसे चींटी पृथ्वी का माप नहीं बता सकती किंतु वह पृथ्वी पर है इतना तो मान सकती है, वैसे ही परमात्मा कैसा है यह बताना संभव नहीं है किंतु परमात्मा का अस्तित्व है यह प्रत्येक व्यक्ति मान सकता है।

जैसे घड़े में पानी डालो तो वह घड़े का आकार ले लेता है, लोटे में डालो तो लोटे का और कटोरी में डालो तो कटोरी का, वैसे ही जिसका हृदय जैसा होता है, परमात्मा उसमें वैसा ही हो भासता है। अरे ! वास्तव में परमात्मा ही सब कुछ है।

जैसे विद्युत-प्रवाह बल्ब में प्रकाश, फ्रिज में ठंडक और हीटर में गर्मी पैदा करता हुआ दिखता है लेकिन है ऊर्जामात्र - एकस्वरूप, वैसे ही भगवान की सत्ता दुष्ट स्वभाववाले को कठोर दिखती है और साधु स्वभाववाले को दया, करुणा, कृपा करनेवाली दिखती है लेकिन

R.N.I. NO. ...
✲ BYCULLA STG. WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO. 236. REGD NO. TECH/47- ... WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO.-U(C) 232/2003 ...
AIRPORT P.O. - 400099. ✲ DELHI REGD. NO. DL-11513/2003 WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO.-U(C) 232/2003 ...

है सत्तामात्र - एकस्वरूप !

प्रश्न : भगवान साकार हैं कि निराकार ?

उत्तर : भगवान साकार भी हैं और निराकार भी। उन्होंने साकार को भी बनाया है और निराकार को भी; जैसे - पक्षी साकार है और आकाश निराकार। अगर भगवान निराकार नहीं होते तो बुद्धि में निराकार की कल्पना कैसे आती और अगर साकार नहीं होते तो ये साकार शरीर कैसे बनते ?

परमात्मा माता में भी हैं और पिता में भी, मित्र में भी हैं एवं शत्रु की गहराई में भी। जैसे विद्युत-प्रवाह कूलर के माध्यम से ठंडक देता है और हीटर के माध्यम से गर्मी, वैसे ही प्यार की वृत्ति से मित्र, मित्र दिखता है और वैर की वृत्ति से शत्रु, शत्रु। किंतु दोनों की गहराई में है एक परमात्मा ही।

प्रश्न : गुरुजी ! ईश्वर है - यह हम कैसे जानें ?

उत्तर : जैसे - यह रूमाल है, तो किसी-न-किसीने बनाया ही है। भले इसे बनानेवाले को तुमने नहीं देखा लेकिन इसे देखकर मानना पड़ता है कि इसको बनानेवाला कोई तो है। ऐसे ही सूरज, चाँद, तारे, पर्वत, नदियाँ, पृथ्वी आदि किसी मनुष्य के बनाये हुए नहीं हैं, फिर भी दिखते हैं तो उनका सर्जनहार परमात्मा ही हो सकता है।

** 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका के सभी सेवादारों तथा सदस्यों को सूचित किया जाता है कि 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका की सदस्यता के नवीनीकरण के समय पुराना सदस्य क्रमांक/रसीद क्रमांक एवं सदस्यता 'पुरानी' है - ऐसा लिखना अनिवार्य है। जिसकी रसीद में ये नहीं लिखे होंगे, उस सदस्य को नया सदस्य माना जायेगा।*

** नये सदस्यों को सदस्यता के अंतर्गत वर्तमान अंक के अभाव में उसके बदले एक पूर्व प्रकाशित अंक भेजा जायेगा।*

अथाह शौर्य की धनी : किरण देवी

मेवाड़ के सूर्य महाराणा प्रताप के भाई शक्तिसिंह की कन्या का नाम था किरण देवी। वह परम सुंदरी और सुशीला थी। उसका विवाह बीकानेर नरेश के भाई महाराज पृथ्वीराज से हुआ था। ये वही पृथ्वीराज थे जिनकी कविता ने महाराणा प्रताप में पुनः राजपूती जोश ला दिया था और फिर उन्होंने किसी भी हालत में अकबर से संधि की बातचीत नहीं की।

अकबर शक्तिशाली सम्राट अवश्य था किंतु उतना ही विलासी भी था। उसने अपनी विषय-वासना की तृप्ति के लिए 'खुशरोज मेला' नामक मेले की एक प्रथा निकाली, जो प्रत्येक माह के प्रमुख त्यौहार के नौवें दिन दरबार-क्षेत्र में लगाया जाता था। इस मेले में राजपूतों की तथा दिल्ली की अन्य स्त्रियाँ जाया करती थीं। पुरुषों को इसमें जाने की अनुमति नहीं थी परंतु इस मेले में अकबर स्त्री-वेश में घूमा करता था। जिस सुंदरी पर वह मुग्ध हो जाता, उसे उसकी कुट्टिनियाँ फँसाकर उसके राजमहल में ले जाती थीं।

एक दिन खुशरोज मेले में लगनेवाले मीना बाजार की सजावट देखने के लिए किरण देवी आयीं। अकबर उसके रूप एवं तेजस्विता को देखकर मुग्ध हो गया। वह उसको अपनी वासना का शिकार बनाना चाहता था। अकबर के संकेत से उसकी कुट्टिनियों ने किरण देवी को धोखे से जनाना महल में पहुँचा दिया। विषयान्ध पामर अकबर ने उसे घेर लिया और नाना प्रकार के प्रलोभन दिये, किंतु वह वीरांगना उन्हें कैसे

स्वीकार करती ? किरण देवी के सौंदर्य को देखकर अकबर की कामवासना भड़कती जा रही थी... ज्यों ही उसने किरण देवी को स्पर्श करने के लिए हाथ आगे बढ़ाया, त्यों ही उसने रणचंडी का स्वरूप धारण कर लिया और अपनी कमर से तेज धारवाली कटार निकाली तथा अकबर को धरती पर पटककर उसकी छाती पर पैर रखकर बोली :

''नीच ! नराधम ! भारत का सम्राट होते हुए भी तूने इतना बड़ा पाप करने की कुचेष्टा की ! भगवान ने सती-साध्वियों की रक्षा के लिए तुझे बादशाह बनाया है और तू उन पर बलात्कार करता है ? दुष्ट ! अधम ! तू बादशाह नहीं, नीच एवं विषयी कुत्ता है, पिशाच है। तुझे पता नहीं मैं किस कुल की कन्या हूँ ?

सारा भारत तेरे पाँवों पर सिर झुकाता है परंतु मेवाड़ का सिसोदिया वंश अभी भी अपना सिर ऊँचा किये खड़ा है। महाराणा प्रताप के नाम से तू आज भी थर्राता है। मैं उसी पवित्र राजवंश की कन्या हूँ। मेरी धमनियों में बाप्पा रावल और राणा साँगा का रक्त है। मेरे अंग-अंग में पावन क्षत्रिय वीरांगनाओं के चरित्र की पवित्रता है।

अगर तू बचना चाहता है तो मन में सच्चा पश्चाताप करके अपनी माता की शपथ खाकर प्रतिज्ञा कर कि अब से खुशरोज का मेला नहीं लगेगा और किसी भी नारी की आबरू पर तू मन नहीं चलायेगा। नहीं तो आज इसी तेज धार की कटार से तेरा काम तमाम किये देती हूँ।''

अकबर के शरीर का तो मानों, खून ही सूख गया। दिल्लीपति के दोनों हाथ थर-थर काँपने लगे ! उसने हाथ जोड़कर बड़ा पश्चाताप करते हुए करुण स्वर में कहा :

''माँ ! क्षमा कर दो। मेरे प्राण तुम्हारे हाथों में हैं, पुत्र प्राणों की भीख चाहता है।''

फिर उसने प्रण किया : 'अबसे खुशरोज मेला कभी नहीं लगेगा।'

दयामयी किरण देवी ने अकबर को प्राणों की भीख दे दी !

तेजस्विनी और वीरांगना किरण देवी ने उस यवन के हाथों से अपने सतीत्व की रक्षा तो की ही, साथ में अन्य नारियों के सतीत्व की रक्षा के लिए खुशरोज मेला भी बंद करवा दिया। किरण देवी ने दिखला दिया कि अबला कही जानेवाली नारी कितनी बलवती होती है !

कैसा था किरण देवी का शौर्य ! जिसने एक बादशाह को भी प्राणों की भीख माँगने के लिए विवश कर दिया !

हे भारत की देवियो ! तुममें भी अथाह शौर्य है, अथाह सामर्थ्य है, अथाह बल है। जरूरत है केवल अपनी सुषुप्त शक्तियों को जगाने की।

*

गीता-प्रश्नोत्तरी

१११. भगवान का विराट रूप देखने के लिए अर्जुन को भगवान ने क्या दिया ?
११२. महर्षियों में भगवान का स्वरूप कौन हैं ?
११३. देवर्षियों में भगवान का स्वरूप कौन हैं ?
११४. संसार-वृक्ष की जड़ कहाँ है ?
११५. संसार-वृक्ष के पत्ते क्या हैं ?
११६. वह स्थान बताओ जहाँ जाकर संसार में वापस नहीं आना पड़ता ?
११७. गीता के अनुसार अन्न कितने प्रकार का है ?
११८. प्राणियों द्वारा खायी हुई वस्तु को पचाने का काम किसका है ?
११९. नरक के द्वार कितने हैं ?
१२०. श्रद्धा कितने प्रकार की होती है ?

पिछले अंक के प्रश्नों के उत्तर

१०१. 'ॐ' अविनाशी ब्रह्म है १०२. कल्याण १०३. देह से मुक्ति १०४. जो अनन्य भाव से भगवान का भजन करते हैं १०५. कर्मयोग १०६. राग-द्वेष से रहित पुरुष १०७. समदर्शी १०८. हर्ष-शोक से रहित होना १०९. उर्ध्व गति ११०. मध्यम।

R.N.I. NO. 48873/91 ...
* BYCULLA STG. WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO. 236. REGD NO. TECH/47-833/MBI ...
AIRPORT PO. - 400099. * DELHI REGD. NO. DL-11513/2003 WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO.-U(C) 232/2003 POSTING ...

जहाँगीर ने शीश नवाया

एक बार गर्मी के दिनों में बादशाह जहाँगीर कश्मीर में सैर-सपाटे के लिए आया हुआ था। शराबी तो वह था ही। यहाँ के सुहाने तथा मनोहारी वातावरण ने उसे पियक्कड़ बना दिया। नशे के आधिक्य से उसके अन्दर का राक्षसी उन्माद भी जाग उठा। उसने तानाशाही फरमान जारी किया कि ''यहाँ के सभी हिन्दुओं को बलात् मुसलमान बना दिया जाय।''

कश्मीर का सूबेदार याकुब खाँ तथा अन्य दरबारी बादशाह का मुँह ताकने लगे। वे जानते थे कि मदिरा के बीस-बीस प्याले रोज चढ़ा जानेवाला यह क्रूर शासक जब जलाल में आता है तो साधारण से अपराध के लिए प्राणदंड तक दे देता है।

याकुब खाँ बोला : ''बादशाह सलामत का हुक्म सिर आँखों पर। जान की हिफाजत पाऊँ तो कुछ अर्ज करूँ, जहाँपनाह !''

''कहो।''

''हुजूर ! काफिरों का गुरु बाबा श्रीचन्द्र इन दिनों यहाँ आया हुआ है। उसे यदि मुसलमान बना लिया जाय तो उसके अनुयायी स्वतः ही मुसलमान बनने को तैयार हो जायेंगे। इस प्रकार सारा काम बड़ी आसानी से हो जायेगा।''

''यह अच्छी तरकीब है। एक साधारण साधु को राजी कर लेना कौन-सी बड़ी बात है ?'' जहाँगीर ने प्रसन्न होकर कहा।

जहाँगीर ने उसी समय अपने कुछ सिपाहियों को योगिराज श्रीचन्द्रजी को पकड़ लाने के लिए भेजा। सिपाही गये, किंतु उदासीन महामुनि श्रीचन्द्रजी के तेज से वे इतने प्रभावित हुए कि उन्हें वापस आने की सुध ही न रही। काफी देर तक जब वे वापस न पहुँचे तो नगर कोतवाल को भेजा गया परंतु वह भी वापस नहीं आया। तब जहाँगीर ने सेनापति को भेजा परंतु सेनापति भी वापस नहीं आया। सेनापति के वापस न आने से क्रोध के मारे जहाँगीर की आँखों से अँगारे निकलने लगे। कुछ ही दिन पहले उसने गुरु अर्जुनदेवजी को अनेक यातनाएँ देकर शहीद किया था। उसने सोचा था कि 'वह बाबाजी को भी या तो मुसलमान बना लेगा या फिर उन्हें कत्ल करवाकर सभी हिन्दुओं को आतंकित कर सरलता से उनका धर्म-परिवर्तन कर सकेगा।' उसने सूबेदार याकुब खाँ को साथ लिया और बाबाजी के निवास पर धड़धड़ाता हुआ जा पहुँचा। बाबाजी तो थे परम योगी व ऋद्धि-सिद्धियों के स्वामी। जहाँगीर कुछ बोले उससे पहले ही उन्होंने उसे आश्चर्यचकित करने के लिए अपने सामने जल रही पवित्र धूनी में से चिनार की जलती हुई एक लकड़ी उठायी और उसे धरती में गाड़ दिया। जहाँगीर के देखते-ही-देखते वह हरी-भरी हो गयी और उसमें से नरम-नरम नयी पत्तियाँ निकलने लगीं। जहाँगीर के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। इस चमत्कार को देखकर उसका सारा क्रोध शांत हो गया। अत्यंत विनम्र होकर उसने बाबाजी का उपदेश सुना, जिसके फलस्वरूप उसके अत्याचारों को कुछ वर्ष के लिए लगाम लगी रही। वह जलती हुई लकड़ी जो बाबाजी के चमत्कार से हरी-भरी हो गयी थी, बाद में चिनार के वृक्ष के रूप में विकसित हुई। उस स्थान पर आज भी 'चिनार साहिब' के नाम से मंदिर बना हुआ है।

बचपन में कैसी हलकी शिक्षा-दीक्षा, मानव-मानव को दुश्मन बनानेवाले कैसे हलके संस्कार पाये होंगे जहाँगीर ने ! इतने मनोबल व सूझबूझवाले जहाँगीर का दिल अगर मजहबवादी संस्कारों से नहीं भरा होता तो बाबा श्रीचन्द्र जैसे संत से कितनी ऊँची आत्मिक शांति प्राप्त कर

सकता था ! वह प्रजा में बसे हुए परमेश्वर की पूजा करके राजा जनक की नाईं पूजनीय हो जाता।

इसलिए बाल्यकाल में क्रूरता व भोग के संस्कार देनेवालों से बच्चों को बचाकर दिव्य संस्कार देना और दिलाना आनेवाली पीढ़ी की उत्तम सेवा है। अधर्म से लोहा लेना, क्रूर संस्कारवालों से, जुल्मियों से लोहा लेना और स्वयं जुल्म न करना, हमारे-तुम्हारे, अपने-पराये का भेद छोड़कर भारतवासी बच्चों को ऐसे संस्कार देने का कार्य हर भारतवासी का कर्तव्य है। बाल-संस्कार के सद्‌गुण देना सभी हिन्दू, मुसलमान, ईसाई भाइयों का कर्तव्य है। न डरो, न डराओ। न जुल्म सहो, न करो। न स्वार्थियों से ठगे जाओ, न स्वार्थी होकर दूसरों को ठगो। न अति भोगी बनो, न औरों को भोग की दलदल में गिराओ। नेक नागरिक बनो व औरों को बनाओ। आत्मसुख पाओ तथा औरों के लिए सहायक बनो।

प्रेरणादायी सूत्र

* 'जिसकी सत्ता से हृदय धड़क रहा है, जिसकी शक्ति से आँखें देख रही हैं, कान सुन रहे हैं, मन विचार कर रहा है, बुद्धि निर्णय ले रही है वह शक्ति तो मेरा सत्यस्वरूप परमात्मा है। सब घटों में वही परमात्मा है।' - ऐसा जिसको स्मरण है वह भगवान में अनन्यचित्त है।

* शत्रु के द्वारा कभी अपमान हो जाता है तो समझदार समझता है कि 'भगवान ने शत्रु को प्रेरित करके मेरा अपमान करवाया है ताकि अभिमान मिट जाय।' मित्र के द्वारा प्रेम, सम्मान मिलता है तब कहता है : 'वाह प्रभु ! मित्र के द्वारा सम्मान व प्रेम दिलवाकर तू मेरा उत्साह बढ़ा रहा है...'

ऐसे विचार करनेवाला अपमान और सम्मान के समय उस प्रभु का ही सुमिरन करता है। जब सुमिरन उसीका करता है तो अपमान आकर चला जाता है, सम्मान आकर चला जाता है और भक्त का मन भगवान में रह जाता है। उसके लिए भगवान सुलभ हो जाते हैं।

पादरियों द्वारा प्रताड़ित एक ईसाई

'सेंट थॉमस आर्थोडॉक्स चर्च' के पादरियों की प्रताड़ना से तंग आकर एक ईसाई ने, जिसका नाम एलेक्स जे. वर्गीस है, चर्च की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया। वर्गीस ने नेत्रदान किया है। इसके अलावा वर्गीस की माँ ने मृत्यु के बाद शरीर को दान करने की घोषणा कर दी है। माँ-बेटे के इस कार्य से नाराज पादरियों ने वर्गीस को मानसिक तौर पर काफी प्रताड़ित किया और उसके सामाजिक बहिष्कार की धमकी दे दी। पादरियों के व्यवहार से आहत वर्गीस ने चर्च की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया और घोषणा कर दी कि अब चर्च से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है, वह स्वतंत्र है।

वर्गीस ने कहा : 'जब मैंने नेत्रदान के विषय में एक समाचार पत्र में लेख लिखा, तभी से पादरी मुझसे नाराज हो गये। मैंने अपनी माँ का इलाज जब रामकृष्ण मिशन अस्पताल में कराना चाहा तो पादरियों ने इसका यह कहकर विरोध किया कि वह एक हिन्दू अस्पताल है, उसमें इलाज कराने से ईसाई धर्म का अपमान होगा, इसलिए तुम किसी मिशनरी अस्पताल में अपनी माँ का इलाज कराओ। परंतु मैंने ऐसा करने से इनकार कर दिया।

जब मैंने पादरियों की बात नहीं मानी तो उन्होंने मेरे दो महीने के पुत्र का जबरन बपतिस्मा (ईसाईकरण) करना चाहा। इस पर मैंने कहा : 'बच्चे को १८ साल का होने दो, फिर वह अपनी मर्जी से जो धर्म चुनना चाहेगा, चुन लेगा।' इस पर पादरियों ने मेरी पत्नी को यह कहकर भड़का दिया कि 'वर्गीस का दिमाग खराब हो गया है।'

वर्गीस का कहना है : 'पादरियों के समूह ने चर्च को अपनी जागीर बना रखा है और उसके जरिये उनका उद्देश्य पैसा कमाना भर है। 'सीरियन सेंट थॉमस चर्च' भारत का पुराना चर्च है, पर वह ईसाइयों के मन में दूसरे धर्मों के प्रति घृणा पैदा करके उन्हें अपना गुलाम बनाये रखना चाहता है।'

- संदर्भ : दोपहर का सामना, मुंबई : २५-१-०३

R.N.I. NO. ...
BYCULLA STG. WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO. 236. REGD NO. TECH/4/ ...
AIRPORT PO. - 400099. DELHI REGD. NO. DL-11513/2003 WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO.-U(C) 232/2003 ...

दान का अधिकारी कौन ?

धर्म के चार चरण होते हैं : सत्य, तप, यज्ञ और दान। सत्ययुग गया तो सत्य गया, त्रेता गया तो तप गया, द्वापर गया तो यज्ञ गया, **दानं केवलं कलियुगे...** कलियुग में केवल दान ही बचा है।

किंतु दान किसको दें व किसको न दें इस बात का भी ज्ञान होना जरूरी है।

नौ प्रकार के व्यक्तियों को दिया हुआ दान व्यर्थ माना जाता है :

(१) जो बातें बनानेवाले हों कि 'मेरा आसन चोरी हो गया, मेरा फलाना हो गया... यह दे दो, वह दे दो।' ऐसे धूर्तों को दान देना व्यर्थ हो जाता है।

(२) जो हमारे धन का दुरुपयोग करने का सोचें, उन्हें भी दान नहीं देना चाहिए। जैसे - कबीरजी से किसीने दान में कुछ माँगा। कबीरजी ने कहा : 'अच्छा, यह धागा चाहिए तो ले जा।' वह धागा ले गया, उसका जाल बुना एवं मछलियाँ पकड़ने लगा। कबीरजी ने उसके पास जाकर हाथ जोड़े : 'भाई ! मुझे माफ कर, मेरा दान किया हुआ धागा मुझे वापस कर दे। मेरे धागे से तू मछलियों को फँसाता है ? मेरी दी हुई चीज से तू दूसरों को सताता है ? मेरा दान तो मुझे नरकों में ले जायेगा।'

(३) जो खुशामद करते हैं (४) जो शठ हैं (५) जो चोर हैं (६) जो अपराधी हैं (७) जो कुवैद्य हैं (८) जो व्यभिचारी हैं, उनको दिया हुआ दान भी व्यर्थ हो जाता है।

(९) जो पहलवान या मल्ल बनना चाहते हैं उनको दिया हुआ दान भी व्यर्थ चला जाता है, क्योंकि मल्ल बनकर वे दूसरों से मारपीट ही तो करेंगे।

नौ प्रकार के व्यक्तियों को दिया हुआ दान दाता का कल्याण करता है। उसको यश का भागी बनाता है। दूसरे जन्म में अकारण ही धन-धान्य, सुख-सम्पत्ति उसको ढूँढ़ती हुई आती है। अगर वह ईश्वर की प्रीति के लिए दान करता है तो ईश्वर भी प्रसन्न होते हैं। इन नौ व्यक्तियों के लिए लगाया हुआ धन दाता को भोग और मोक्ष से सम्पन्न कर देता है। अक्षय फल की प्राप्ति कराता है।

(१) जो सदाचारी हैं, संयमी हैं ऐसे पुरुषों की सेवा में अथवा ऐसे पुरुषों के दैवी कार्य में दान करने से दान सफल होता है।

(२) जो विनीत हैं (३) जो वास्तव में ईमानदार हैं और दीन अवस्था में आ गये हैं (४) जो परोपकार के काम करते हैं (५) जो अनाथ हैं उनकी सेवा में एवं उनकी उन्नति में धन लगाना दाता का कल्याण करने में सहायक है।

(६) माता (७) पिता (८) गुरु की सेवा में लगाया गया धन सार्थक होता है।

(९) जो सच्चे मित्र हों तथा उनकी अवस्था गिर गयी हो तो उनको मदद करना यह भी उचित दान कहा गया है।

यत्फलं सर्वयज्ञेषु सर्वदानेषु विद्यते।
भगवत्कथां श्रवणात् तत्फलं विद्यते नराः ॥

'जो फल मनुष्य को सब प्रकार के यज्ञ करने एवं सब प्रकार के दान करने से प्राप्त होता है, वही फल (उसे) भक्तिपूर्वक भगवान की कथा सुननेमात्र से मिल जाता है।'

मंत्र की १५ शक्तियों में से एक है - दानशक्ति। इसके प्रभाव से मंत्र-जापक पुष्टि और वृद्धि का दाता बन जायेगा। फिर वह माँगनेवाला नहीं रहेगा, देने की शक्तिवाला बन जायेगा। वह देवी-देवता से, भगवान से माँगेगा नहीं, स्वयं देने लगेगा।

- आश्रम से प्रकाशित पुस्तक 'भगवन्नाम-जप महिमा' से

स्वास्थ्यप्रदायक प्रयोग

आयुर्वेद के सर्वश्रेष्ठ आचार्य चरक ने कहा है :

अनेन उपदेशेन न अनौषधिभूतं जगति किंचित् द्रव्यं उपलभ्यते । तां तां युक्ति अर्थं च तं तं अभिप्रेत्य ॥

(चरक सूत्रस्थान : २६.१२)

अर्थात् संसार में ऐसा कोई भी द्रव्य नहीं है जो औषधि नहीं है । संसार के सभी पदार्थ भिन्न-भिन्न युक्तियों से भिन्न-भिन्न प्रयोजन के अनुसार प्रयोग में लाये जा सकते हैं । कौन-सा पदार्थ, कौन-सी व्याधि में, किस प्रकार से उपयोग में लाया जा सकता है, इसका ज्ञान अगर हमारे पास हो तो बहुत ही आसानी से उपलब्ध होनेवाले पदार्थों से हम छोटी-मोटी सभी प्रकार की बीमारियों का इलाज अनायास ही कर सकते हैं ।

शास्त्रों में आता है :

यस्य देशस्य यो जन्तुस्तज्ज तस्यौषधं हितम् ।

अर्थात् जो प्राणी जहाँ जन्मा है, उसके लिए उसी देश की औषधियाँ एवं आहार-विहार हितकर होते हैं ।

उस स्थान का अन्न-फल-हवा एवं औषधियाँ उसे जन्म से ही सात्म्य अर्थात् अनुकूल होती हैं । शरीर अस्वस्थ होने पर उसी स्थान पर उपलब्ध पत्र, फल, पुष्प, जल, मिट्टी आदि से वह पुनः स्वास्थ्य-संपादन कर सकता है । बाहर की दवाइयाँ और बाहर के फलादि लेनेवालों को सावधान रहना चाहिए ।

भारतीयों के लिए भारत की मिट्टी से उत्पन्न स्वदेशी औषधियाँ विशेष हितकारी हैं । भारत में विपुलता से उपलब्ध फल-फूल, अन्न, औषध, तुलसी, नीम, आँवला, पीपल, हर्रे (हरड़), हल्दी आदि सर्वसुलभ औषधियों से हम हृदयरोग, मधुमेह और कैंसर जैसी भयंकर व्याधियों को भी नष्ट कर सकते हैं । भारत की मिट्टी, जल, हवा तथा गाय का गोबर व गोमूत्र भी कितने लाभदायी हैं और उनका युक्तिपूर्वक प्रयोग करने से हम घर बैठे ही किस प्रकार स्वास्थ्य-लाभ कर सकते हैं, इस विषय में यहाँ कुछ प्रकाश डाला गया है ।

१. काया को पवित्र, निर्मल बनानेवाला तुलसी-प्रयोग : यदि प्रातः, दोपहर और शाम के समय तुलसी का सेवन किया जाय तो उससे मनुष्य की काया इतनी शुद्ध हो जाती है, जितनी अनेक बार चान्द्रायण व्रत रखने से भी नहीं होती । तुलसी तन, मन और बुद्धि - तीनों को निर्मल, सात्त्विक व पवित्र बनाती है । यह काया को स्थिर रखती है, इसलिए इसे 'कायस्था' कहा गया है। त्रिकाल संध्या के बाद ७ तुलसीदल सेवन करने से शरीर स्वस्थ, मन प्रसन्न और बुद्धि तेजस्वी व निर्मल बनती है ।

२. बुद्धि व शक्तिवर्धक प्रयोग : रात को ७ बादाम पानी में भिगो दें । सुबह उनके छिलके निकालकर एवं २ काली मिर्च मिलाकर खूब महीन पीस लें । इस मिश्रण में ३१ तुलसीदल का रस, मिश्री (आवश्यकतानुसार) व १०० मि.ली. पानी मिलाकर शरबत बना लें । यह शरबत सुबह खाली पेट लेने से बुद्धि, शारीरिक शक्ति एवं रक्त में चमत्कारिक वृद्धि होती है, जिससे शरीर में स्फूर्ति व ताजगी बनी रहती है । इससे नेत्रज्योति भी बढ़ती है । बादाम की जगह पर खरबूजे के १५-२० बीजों का भी उपयोग कर सकते हैं । अमेरिकन बादाम भारतीय बादाम की अपेक्षा शक्तिहीन होते हैं ।

यह एक अनुभवसिद्ध एवं अत्यंत लाभदायी प्रयोग है । आवश्यकता पड़ने पर इसे दिन में २

R.N.I. NO. ...
BYCULLA STG. WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO. 236. REGD NO. TECH/47 ...
AIRPORT PO. - 400099. DELHI REGD. NO. DL-11513/2003 WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO.-U(C) 232/2003 ...

बार भी कर सकते हैं । इसके सेवन के दो-ढाई घंटे बाद ही दूध या भोजन लें ।

३. कैंसर-निवारक तुलसी-प्रयोग : तुलसी तीक्ष्ण, उष्ण व रक्तशुद्धिकर गुणों से युक्त होने के कारण शरीर में एकत्रित हुए अशुद्ध पदार्थों को बाहर निकालकर शरीर को शुद्ध व निर्मल बनाती है । कई बार देखा गया है कि कैंसर में जहाँ कई बड़ी-बड़ी, महँगी दवाइयाँ असर नहीं करतीं, वहाँ केवल तुलसी के प्रयोग से शीघ्र ही आराम मिलता है ।

तुलसी के १०० पत्ते पीसकर उसमें ३ ग्राम हल्दी व १० ग्राम शहद मिलायें और रोगी को दिन में ३ बार दें । ४ लौंग पीसकर १ पतीली पानी में मिलायें । पानी उबालकर आधा कर दें । प्यास लगने पर यही पानी दिनभर पियें । आहार में केवल मूँग लें । ६ माह तक यह प्रयोग चालू रखें ।

४. हृदयरोग व उच्च रक्तचाप में : तुलसी के ३० पत्तों के रस में १ नींबू का रस तथा मिश्री मिलाकर सुबह खाली पेट लेने से हृदय की रक्तवाहिनियाँ साफ होकर हृदय को नियमित रूप से रक्त पहुँचाने लगती हैं । **आजकल बायपास सर्जरी के नाम पर जो लूट चल पड़ी है, उससे यह प्रयोग करनेवाले बच जायेंगे ।**

इससे हृदय मजबूत हो जाता है । इसी मिश्रण में १ ग्राम दालचीनी मिलाकर लेने से रक्त में कोलेस्ट्रोल की मात्रा घटने लगती है । यह प्रयोग संपूर्ण शरीर की शुद्धि करनेवाला है ।

'पद्म पुराण' में लिखा है **संसारभर के फूलों और पत्तों के पराग या रस से जितने भी पदार्थ या दवाइयाँ बनती हैं, तुलसी के आधे पत्ते से ही उन सबसे अधिक आरोग्य मिल जाता है ।** सहज सुलभ इस दिव्य औषधि के सेवन से हम निरामय जीवन जी सकते हैं ।

च्यवनप्राश, तुलसी के पत्ते और हर्रे (हरड़े) का उपयोग पूज्य बापूजी भी प्रतिदिन करते हैं । इतना श्रम होते हुए भी उनका स्वास्थ्य कितना उत्तम है - यह सभी जानते हैं । (क्रमशः)

*

स्वास्थ्य-कणिकाएँ

समदोषः समाग्निश्च समधातुमलक्रियः ।
प्रसन्नात्मेन्द्रियमनाः स्वस्थ इत्यभिधीयते ॥

'जिस पुरुष के शारीर-मानस दोष और अग्नि सम अर्थात् यथायोग्य हैं, धातु-उपधातु-मल तथा इनकी क्रिया एवं निद्रा सम है, अतएव जिसका शरीर, इन्द्रियाँ तथा मन प्रसन्न हैं उसे स्वस्थ कहा जाता है ।' **(सुश्रुत सूत्रस्थान : १५.४१)**

२. **रोगाः सर्वेऽपि मन्देऽग्नौ । (अष्टांग हृदय, निदानस्थान : १२.१)** 'प्रायः सभी रोगों का मूल मंदाग्नि है ।' उतनी ही मात्रा में आहार लेना चाहिए, जितनी मात्रा में आसानी से पच सके । अपच से कब्ज की स्थिति पैदा होती है और कब्ज से कई व्याधियाँ उत्पन्न होती हैं ।

३. तेल वायुनाशक श्रेष्ठ द्रव्य है । घी पित्तनाशक श्रेष्ठ द्रव्य है । शहद कफनाशक श्रेष्ठ द्रव्य है । तेलों में तिल का तेल सर्वश्रेष्ठ है । घी में गाय का घी सर्वश्रेष्ठ है ।

४. अदरक श्रेष्ठ दीपक-पाचक है अर्थात् भूख भी बढ़ाता है एवं पाचन भी करता है । भोजन में सदा लाल मिर्च के स्थान पर अदरक एवं काली मिर्च (अल्प मात्रा में) का प्रयोग किया जाय । इससे गैस, अम्लपित्त एवं कब्ज की तकलीफ दूर हो जाती है तथा सात्त्विकता रहती है ।

भोजन से पूर्व ५ से १० मि.ली. अदरक के रस एवं २ से ५ मि.ली. नींबू के रस में सेंधा नमक डालकर पीने से मंदाग्नि, अजीर्ण एवं अरुचि में लाभ होता है । रविवार को अदरक का सेवन वर्जित है ।

मंत्र-प्रयोग

जले रक्षतु वाराहः, स्थले रक्षतु वामनः ।
अटव्यां नारसिंहश्च, सर्वतः पातु केशवः ॥
जले रक्षतु नन्दीशः, स्थले रक्षतु भैरवः ।
अटव्यां वीरभद्रश्च, सर्वतः पातु शंकरः ॥

इन दो श्लोकों का उच्चारण करके सोनेवाले को जल, अग्नि, वायु एवं मलिन चीजों का भय नहीं रहता, उसे विशेषकर बुरे स्वप्न नहीं आते ।

ब्लड कैंसर से मुक्ति

जनवरी २००२ में मेरे बड़े पुत्र को बुखार आया था। डॉक्टरों को दिखाया तो किसीने मलेरिया कहकर दवाइयाँ दीं तो किसीने टायफाईड कहकर इलाज शुरू किया। दवा लेने से शरीर नीला पड़ गया और सूज गया। शरीर में खून की कमी होने से छः बोतलें खून चढ़ाया गया। इंजेक्शन देने से पूरे शरीर को लकवा मार गया। पीठ और पेट का एक्स-रे लिया गया। डॉक्टरों ने उसे वायु का बुखार तथा रक्त का कैंसर बताया और कहा कि उसके हृदय का वाल्व चौड़ा हो गया है। ज्यों-ज्यों इलाज किये, त्यों-त्यों मर्ज बढ़ा दिया। यह है अंग्रेजी दवाओं और इंजेक्शनों का काला मुँह ! फिर भी हम चेतते नहीं।

अब हम हिम्मत हार गये। गुरुजी के सिवाय कोई सहारा नहीं था। हमने पूज्यश्री की कुटिया की परिक्रमा की एवं श्री आसारामायण का पाठ किया। गुरुजी की करुणा-कृपा बरसी और १८ दिनों में ही मेरा पुत्र चलने-फिरने लगा।

अब वह पूर्णतया ठीक हो चुका है। मैं उन महापुरुष की जीवनगाथा को बार-बार नमन करता हूँ, जिसके श्रद्धा-संयुक्त पाठ से मेरे पुत्र को जीवनदान मिल सका और भक्त भाइयों से प्रार्थना करता हूँ कि वे नित्य इसका मंगलमय पाठ किया करें।

– एन.डी. चावला
प्रसिद्ध उद्योगपति,
सेक्टर ३५, चण्डीगढ़.

*

...और मैं डी वाई.एस.पी.बन गयी

मैंने सन् १९९६ में औरंगाबाद (महाराष्ट्र) में परम पूज्य बापूजी से मंत्रदीक्षा ली थी। दीक्षा के कुछ ही महीने बाद मैं गुरुदेव से अमदावाद आश्रम में मिली, तब पूज्य बापूजी से डी वाई.एस.पी. बनने का आशीर्वाद लिया तो उन्होंने मुझे मंत्र दिया तथा पढ़ाई जारी रखने की आज्ञा दी। गुरुदेव की आज्ञानुसार मैं मंत्रजप करती रही और एक ही वर्ष में डी वाई.एस.पी. बन गयी। अभी मैं नांदेड़ में कार्यरत हूँ। यह सब परम पूज्य बापूजी के आशीर्वाद का ही फल है। अभी मैं पूज्य बापूजी के आशीर्वाद से समाज-सेवा कर रही हूँ तथा भविष्य में इस पुलिस विभाग में सच्चाई से अधिकाधिक सेवा कर सकूँ, ऐसा आशीर्वाद चाहती हूँ।

– सुनीता सालुंके
(डी वाई.एस.पी.)
नांदेड़ (महाराष्ट्र).

श्रद्धा बहुत ऊँची चीज है। विश्वास और श्रद्धा का मूल्यांकन करना संभव ही नहीं है। जैसे अप्रिय शब्दों से अशांति और दुःख पैदा होता है, ऐसे ही श्रद्धा और विश्वास से अशांति शांति में बदल जाती है, निराशा आशा में बदल जाती है, क्रोध क्षमा में बदल जाता है, मोह समता में बदल जाता है, लोभ संतोष में बदल जाता है और काम राम में बदल जाता है। श्रद्धा एवं विश्वास के बल से और भी कई रासायनिक परिवर्तन होते हैं। श्रद्धा के बल से शरीर का तनाव शांत हो जाता है, मन संदेहरहित हो जाता है, बुद्धि में दुगनी-तिगुनी योग्यता आती है और अज्ञान की परतें हट जाती हैं।

श्रद्धापूर्वाः सर्वधर्मा... सभी धर्मों में – चाहे वह हिन्दू धर्म हो, चाहे इसलाम धर्म या अन्य कोई भी धर्म हो, उसमें श्रद्धा की आवश्यकता है। ईश्वर, औषधि, मूर्ति, तीर्थ एवं मंत्र में श्रद्धा होगी तो फल मिलेगा।

R.N.I. NO. ...
* BYCULLA STG. WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO. 236. REGD NO TECH/47 ...
AIRPORT PO. - 400099. * DELHI REGD. NO. DL-11513/2003 WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO. U(C) 232/2003 ...

('ऋषि प्रसाद' प्रतिनिधि द्वारा)

''एकांत के सुख के आगे इन्द्र का सुख भी कुछ नहीं है।'' - ये अनुभवयुक्त अमृतवचन हैं परम पूज्य बापूजी के। पूज्यश्री के जीवन में ये वचन स्पष्ट परिलक्षित होते हैं। १३ नवम्बर से १ दिसम्बर तक वे तीर्थराज **पुष्कर (राज.)** में एकांतवास में रहे। इस दौरान प्रतिदिन शाम के समय पूज्यश्री के मुखारविन्द से निःसृत आत्मस्पर्शी अमृतवाणी का संचय कर १२ ऑडियो कैसेट का एक सेट तैयार किया गया है। जिसका विमोचन पूज्य बापूजी के करकमलों से **वृन्दावन (उ.प्र.)** में 'पूर्णिमा महोत्सव' के दौरान हुआ।

एकांतवास के बाद प्रारम्भ हुई लगातार सत्संग-कार्यक्रमों की एक लम्बी शृंखला, जिसका उद्देश्य था अल्प समय में अधिकाधिक स्थानों के जनता-जनार्दन तक ज्ञानामृत पहुँचाना। २ से ४ दिसम्बर तक राजस्थान के **अजमेर** में सत्संग-कार्यक्रम सम्पन्न हुआ तो ६ से ८ दिसम्बर तक योगिराज श्रीकृष्ण की लीलास्थली उत्तर प्रदेश के **वृन्दावन** में 'पूर्णिमा महोत्सव' सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् १० दिसम्बर को मध्य प्रदेश के **सागर** में पूज्यश्री के पदार्पण से सचमुच, वहाँ के श्रोताओं का अभूतपूर्व सागर ही सत्संग-स्थल पर लहराया। इन महापुरुष के दर्शन की अभिलाषा से सागर का सागर तो उमड़ा ही, पर आस-पास के इलाकों से उमड़े सागर से सागर महासागर बन गया।

इस नगर में पहली बार पधारे पूज्यश्री के दर्शन-सत्संग में आयी जनमेदनी से विशाल पंडाल तो भर ही गया, लेकिन उससे कई गुना लोग सड़कों पर, आस-पास की जगहों पर, जहाँ जिसको जगह मिली वहाँ बैठकर या खड़े रहकर सत्संग-अमृत का पान कर रहे थे। पंडाल के बाहर बैठे हुए लोग भी तन्मयता से पूज्यश्री के अमृतवचनों का रसास्वादन कर रहे थे। यह है सत्संग-कार्यक्रम के प्रथम दिन के प्रथम सत्र का नजारा। दूसरे सत्र में तो श्रोताओं की भीड़ सारी सीमाएँ पार कर गयी। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के समुदाय व्यासपीठ के पीछे व सड़कों पर भी खड़े रहकर लोक-लाड़ले सद्गुरुदेव के लोकमांगल्यकारी अमृतवचनों का रसास्वादन कर रहे थे।

सागरवासियों की उमड़ती-उभरती श्रद्धा व प्रेम को देखते हुए पूज्यश्री ने यहाँ निकट भविष्य में 'ध्यान योग शिविर' आयोजित किये जाने की संभावना दर्शायी। तत्पश्चात् पूज्यश्री **दमोह (म.प्र.)** में पहुँचे, जहाँ ११ दिसम्बर की सुबह को दमोहवासियों ने व शाम को **सिहोरा**वासियों ने सत्संग की बहती गंगा में स्नान कर अपने तन-मन को पावन किया।

अगले ही दिन अर्थात् १२ दिसम्बर से **जबलपुर (म.प्र.)** में पूज्यश्री द्वारा 'ज्ञान-भक्ति-योग वर्षा' का आरंभ हुआ। सनातन धर्म की सनातनता पर प्रकाश डालते हुए ब्रह्मनिष्ठ पूज्य बापूजी ने कुंभ की भाँति उमड़े जनसैलाब को अपने धर्म पर दृढ़ रहने की प्रेरणा दी।

'श्रीमद्भगवद्गीता' व 'श्रीमद्भागवत' के अथाह ज्ञान को अपनी सारगर्भित, सूत्रात्मक वाणी में सँजोते हुए पूज्यश्री ने यहाँ के भक्तों को भावविह्वल कर दिया। १४ दिसम्बर को सत्संग-कार्यक्रम की पूर्णाहुति की वेला में निष्काम, निःस्वार्थ ईश्वरीय प्रेम की पराकाष्ठा देखने को मिली। पूज्यश्री की भावपूर्ण हृदयस्पर्शी अमृतवाणी से एक साथ लाखों हृदय भावगंगा में निमग्न हुए। लाखों नेत्रों से ईश्वरीय प्रेम के शीतल अश्रु बह निकले।

भक्तों के भावों की दुनिया ही निराली है।

ईश्वरीय प्रेम में किये गये रुदन में जो हृदयानंद प्राप्त होता है, उसका अनुभव तो वे भक्त-हृदय ही कर पाते हैं। अन्य लोगों के लिए तो यह कल्पनातीत बात है कि 'भला रुदन में आनंद कैसा ?' लेकिन यह सत्य है। पूज्यश्री के प्रेरक सान्निध्य में आयोजित ध्यान योग शिविरों में ऐसा अलौकिक वातावरण सहज ही सृजित होता है। **हाथ कंगन को आरसी क्या ?** आप १५ से १८ जनवरी २००४ तक अमदावाद आश्रम में आयोजित 'उत्तरायण ध्यान योग शिविर' में पधारिये और स्वयं पान कीजिये इस ईश्वरीय रसामृत का। निगुरे और केवल इस स्थूल जगत से ही प्रभावित रहनेवाले तो यह ईश्वरीय नजारा देखकर अवश्य ही दाँतों तले उँगली दबा लेंगे।

इस सत्संग-यात्रा का अगला जंक्शन महाराष्ट्र का **यवतमाल** नगर था, जहाँ लाखों भक्त पूज्यश्री के दर्शन-सत्संग के लिए वर्षों से बेकरार थे। १३ व १४ दिसम्बर को आश्रम की साध्वी कृष्णा बहन के प्रवचन यहाँ सम्पन्न हुए। १४ दिसम्बर की शाम को पूज्यश्री जबलपुर से यहाँ पहुँचे। व्यासपीठ पर सद्गुरुदेव का पदार्पण होते ही सारा पंडाल उनकी जय-जयकार से गूँज उठा। १५ दिसम्बर की शाम तक यवतमाल को आत्मिक माल से मालामाल करते हुए पूज्यश्री **लातूर (महा.)** पहुँचे, जहाँ लाखों श्रद्धालु सद्गुरुदेव के दर्शन के लिए आतुर हुए बैठे थे। १६ दिसम्बर को यहाँ एक दिवसीय सत्संग-कार्यक्रम सम्पन्न करके पूज्यश्री **सोलापुर (महा.)** पहुँचे, जहाँ १७ और १८ दिसम्बर को २ दिवसीय सत्संग-कार्यक्रम संपन्न हुआ। १७ दिसम्बर के प्रातःकालीन सत्र में नगर के विभिन्न विद्यालयों से आये छात्र-छात्राओं में पूज्यश्री ने शुभ संस्कारों का सिंचन किया और उन्हें जीवन में महान होने के गुर (युक्तियाँ, नुस्खे) बताये। साथ ही याददाश्त बढ़ाने की कला भी बतायी एवं कुछ यौगिक प्रयोग भी करवाये।

१९ व २० दिसम्बर को **पूना (महा.)** वासियों को सत्संग-वर्षा का लाभ देते हुए पूज्यश्री ने जीवन में सदैव प्रसन्न, उदार व सम रहने का संदेश दिया। 'देव-मानव हास्य-प्रयोग' कराते हुए गीताममर्मज्ञ परम पूज्य बापूजी ने चिंता को दूर भगाने का संदेश दिया। उन्होंने कहा :

चिंता से चतुराई घटे, घटे बुद्धि और ज्ञान।
चिंता बड़ी अभागिनी, चिंता चिता समान॥

कबीरजी की साखी में अवसरोचित संशोधन करते हुए विनोद के स्वर में विनोदी स्वभाव के पूज्यश्री ने कहा :

चिंता ऐसी डाकिनी, काटि कलेजा खाय।
बापू बेचारे क्या करें, कहाँ तक कथा सुनायें॥

कुछ क्षणों के लिए समस्त मंडप में मधुर हास्य का वातावरण छा गया। २१ से २३ दिसम्बर तक प्रातःस्मरणीय गुरुदेवश्री की ज्ञानगंगा **उल्हासनगर (महा.)** में बही। विशाल भक्तसमुदाय को देखकर लगा मानों, उल्हासनगर और कल्याण आत्मसुख से, सच्चे सुख से उल्लासित हो रहे हैं।

इन दिनों पूज्यश्री की उपस्थितिमात्र से आनंद-उल्लास छाया रहा। ज्ञान-ध्यान व सूझबूझ से हृदय में भगवद्भाव ओतप्रोत रहा और सच्चा सुख छाया रहा...

पूज्यश्री के आगामी कार्यक्रम

(१) आहवा (गुज.) : १ और २ जनवरी।
सरकारी कॉलेज ग्राउण्ड, आहवा, जि. डांग.
फोन : ९४२६१६१३७२, ९४२६४३४३४६.
(२) वलसाड (गुज.) : ४ से ७ जनवरी।
शांति नगर के सामने, तीथल रोड.
फोन : (०२६३२) २५५६२०, २५९७००.
(३) अमदावाद (गुज.) : १५ से १८ जनवरी।
(उत्तरायण ध्यान योग शिविर)
संत श्री आसारामजी आश्रम.
फोन : (०७९) ७५०५०१०-११.

पूर्णिमा दर्शन : ७ जनवरी २००४

BYCULLA STG. WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO. 236. REGD NO. TECH/47 ... WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO.-U(C) 232/2003 ...
AIRPORT PO. - 400099. DELHI REGD. NO. DL-11513/2003 WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO.-U(C) 232/2003

ज्ञान-भक्ति हमें दीजिये, हे सद्गुरु भगवन् ! दर्शन-सत्संग से अभी, हम हुए हैं पावन ॥ लातूर (महा.)
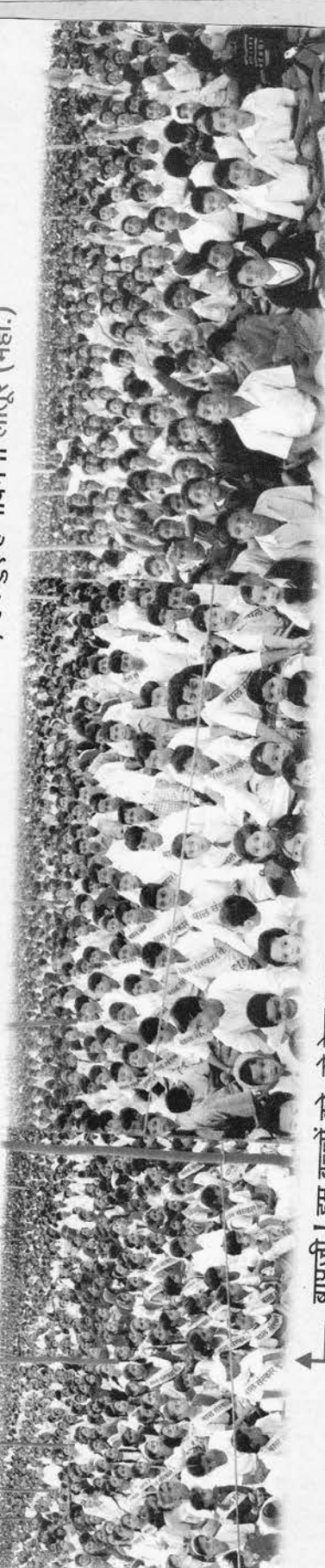
बापूजी ! हम बच्चों को, दो ऐसा वरदान। अज्ञान तिमिर मिट जाये, हो हमारा कल्याण ॥ सोलापुर (महा.)

करूँ आरती गुरुवर ! जो ईश्वर की ओर ले जाये। भाग्य खुला ईश गुरु मिला तो मुश्किल हल हो जाये ॥ उल्हासनगर (महा.)

हास्य प्रयोग कराये बापूजी प्रसन्नता भी छलकायी । प्रभुप्रीति सिखला के हमरी जीवन बगिया महकायी ॥ पिंपरी, पूना (महा.)

म.प्र. की मुख्यमंत्री बनने से पूर्व भोपाल आश्रम में पूज्य बापूजी से मार्गदर्शन एवं शुभाशीष पाते हुए सुश्री उमा भारती ।

↑ सुखदाता दुःखभंजना, करूँ तिहारी आस । ऐसी करो कृपा गुरुवर ! रहूँ तिहारे पास ॥ यवतमाल (महा.) ↑

↓ गुरुवर तुम्हरी करेंगे पूजा । तुम सम कहीं न देव है दूजा ॥ जबलपुर (म.प्र.) ↓

R.N.I. NO. 48873/91 POSTAL REGISTRATION. NO. GUJ-1132. LICENSED TO POST WITHOUT PRE-PAYMENT LICENSE NO. 207. POSTING FROM AHMEDABAD 2-15 OF EVERY MONTH.
✻ BYCULLA STG. WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO. 236. REGD NO. TECH/47 833/MBI/2003-05 POSTING FROM MUMBAI 9 & 10th OF EVERY MONTH. ✻ FOREIGN POSTING 5 & 6 OF EVERY MONTH FROM AIRPORT PO. - 400099. ✻ DELHI REGD. NO. DL-11513/2003 WITHOUT PRE-PAYMENT LIC. NO.-U(C) 232/2003 POSTING FROM DELHI 10-11 OF EVERY MONTH.